वर्ष-1 , अंक-16 | बेंगलुरु, शनिवार , 05 सितम्बर 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaaratarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

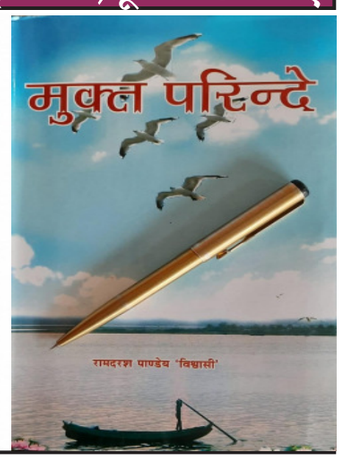

अंतरिक्ष में भारत की नई आंख

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaaratarth.com

श्रीहरिकोटा, 4 सितंबर 2026। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए शुक्रवार तड़के GSLV-F17 रॉकेट के माध्यम से एडर-05 पृथ्वी अवलोकन उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया। यह मिशन भारत की अंतरिक्ष आधारित पृथ्वी निगरानी क्षमता को नई मजबूती देने वाला महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे प्रक्षेपण परिसर से सुबह 2:55 बजे GSLV-F17 ने उड़ान भरी। इसरो के अनुसार, रॉकेट ने एडर-05 को सफलतापूर्वक निर्धारित सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में स्थापित कर मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। जियोसिंक्रोनस कक्षा से भारत का पहला इमेजिंग उपग्रह EOS-05 एक अत्याधुनिक पृथ्वी अवलोकन अंतरिक्ष यान है। इसरो के अनुसार, यह भारत का पहला ऐसा इमेजिंग उपग्रह है, जिसे जियोसिंक्रोनस कक्षा से पृथ्वी की निगरानी के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इस प्रकार की कक्षा से उपग्रह

किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र की अपेक्षाकृत निरंतर निगरानी करने की क्षमता प्रदान कर सकता है। इससे पृथ्वी अवलोकन और विभिन्न भौगोलिक गतिविधियों के अध्ययन में भारत की तकनीकी क्षमता को विस्तार मिलने की संभावना है। EOS-05 मिशन को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। 18 मिनट में तय की अंतरिक्ष यात्रा का अहम चरण प्रक्षेपण के बाद GSLV-F17 ने निर्धारित उड़ान क्रम के अनुसार उपग्रह को उसके लक्षित सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में स्थापित किया। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, यह मिशन GSLV प्रक्षेपण यान की 19वीं उड़ान थी। EOS-05 के सफल प्रक्षेपण के साथ इसरो ने एक बार फिर जटिल अंतरिक्ष मिशनों को अंजाम देने की अपनी तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन किया है। पृथ्वी निगरानी में मिलेगी नई मजबूती EOS-05 को पृथ्वी अवलोकन से जुड़े उद्देश्यों के लिए विकसित किया गया है। उपग्रह से प्राप्त आंकड़े भविष्य में मौसम, पर्यावरण, प्राकृतिक आपदाओं और अन्य भू-आधारित गतिविधियों की निगरानी जैसे क्षेत्रों में उपयोगी हो सकते हैं। जियोसिंक्रोनस कक्षा से इमेजिंग की क्षमता भारत के लिए विशेष महत्व रखती है, क्योंकि इससे किसी व्यापक क्षेत्र पर लगातार नजर रखने की संभावना बढ़ती है। हालांकि उपग्रह की विभिन्न सेवाओं और परिचालन उपयोग से संबंधित विस्तृत जानकारी मिशन के आगामी चरणों और इसरो की आधिकारिक घोषणाओं के बाद और स्पष्ट होगी। प्रधानमंत्री ने दी इसरो टीम को बधाई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिशन की सफलता पर इसरो के वैज्ञानिकों और पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने इस उपलब्धि को देश के लिए गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि यह भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र की उत्कृष्टता, नवाचार और बढ़ती क्षमताओं को दशार्ती है। प्रधानमंत्री ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में इसरो और भारतीय उद्योग के बीच बढ़ते सहयोग को भी महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इससे देश की अंतरिक्ष क्षमताओं को नई मजबूती मिल रही है। आत्मनिर्भर भारत की अंतरिक्ष यात्रा में महत्वपूर्ण कदम EOS-05 मिशन भारत की वैज्ञानिक क्षमता और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह सफलता ऐसे समय में आई है, जब भारत अंतरिक्ष अनुसंधान, पृथ्वी अवलोकन, उपग्रह प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष आधारित सेवाओं के क्षेत्र में लगातार अपनी क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। GSLV-F17 और EOS-05 मिशन की सफलता ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। आने वाले समय में उपग्रह के परिचालन चरण और इससे मिलने वाले आंकड़ों की उपयोगिता पर वैज्ञानिक जगत की नजर रहेगी।

कन्हैया जन्मे, भक्ति में डूबा देश

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaaratarth.com

नई दिल्ली, 4 सितंबर 2026। नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की के जयघोष के साथ शुक्रवार को देशभर में भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव जन्माष्टमी श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। मंदिरों से लेकर घरों तक धार्मिक वातावरण देखने को मिला और श्रद्धालु अपने आराध्य श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन नजर आए। देश के विभिन्न राज्यों में मंदिरों को आकर्षक ढंग से सजाया गया। विशेष पूजा-अर्चना, आरती, भजन-कीर्तन और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने व्रत रखकर भगवान श्रीकृष्ण की आराधना की और मंदिरों में दर्शन के लिए बड़ी संख्या में पहुंचे। मथुरा-वृंदावन में विशेष उत्साह भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा और उनकी लीलास्थली वृंदावन में जन्माष्टमी का उत्साह विशेष रूप से देखने को मिला। मंदिरों में भगवान के बाल स्वरूप का विशेष श्रृंगार किया गया और जन्मोत्सव को लेकर धार्मिक आयोजन किए गए। श्रद्धालु मध्यरात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के

पावन क्षण की प्रतीक्षा करते रहे। घरों और मंदिरों में आकर्षक झांकियां सजाई गईं तथा बाल गोपाल के विभिन्न स्वरूपों की पूजा-अर्चना की गई। भक्ति में डूबा देश जन्माष्टमी के अवसर पर देश के अनेक हिस्सों में भजन-कीर्तन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और उनकी लीलाओं का स्मरण करते हुए धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया। जैसे-जैसे मध्यरात्रि का समय नजदीक आया, मंदिरों में श्रद्धालुओं की उत्सुकता बढ़ती गई। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय मंदिरों में घंटियों की ध्वनि, शंखनाद और जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो उठा। धर्म और कर्म का संदेश देता है पर्व जन्माष्टमी केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं है, बल्कि भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर भी है। श्रीकृष्ण का जीवन प्रेम, सत्य, कर्तव्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। भगवद्गीता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने मानव जीवन में कर्म और कर्तव्य के महत्व का संदेश दिया। कठिन परिस्थितियों में धैर्य और विवेक बनाए रखने की उनकी शिक्षा आज भी समाज के लिए प्रासंगिक मानी जाती है। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर देशभर में श्रद्धालुओं ने सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। हर ओर गूंजता रहा—जय श्रीकृष्ण जय कन्हैया लाल की!

भारत-बेल्जियम की रक्षा साझेदारी मजबूत

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

नई दिल्ली, 4 सितंबर 2026। भारत और

बेल्जियम ने रक्षा क्षेत्र में सहयोग को नई गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। दोनों देशों के बीच रक्षा उद्योग से जुड़े 10 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इन समझौतों के तहत संयुक्त रूप से रक्षा उपकरणों के निर्माण, तकनीकी सहयोग और सैन्य क्षेत्र में साझेदारी बढ़ाने पर सहमति बनी है। रहित समुद्री प्रणालियां, माइन वॉरफेयर, हथियार प्रणालियां और इलेक्ट्रो-ऑप्टिक्स से जुड़े क्षेत्र प्रमुख हैं। इसके अलावा दोनों देशों के बीच ड्रोन, ड्रोन-रोधी प्रणालियों, एयर-डिफेंस सॉफ्टवेयर और बख्तरबंद वाहनों से संबंधित प्रणालियों में भी सहयोग बढ़ाने की दिशा तय की गई है। इससे रक्षा प्रौद्योगिकी और स्वदेशी रक्षा उत्पादन से जुड़े क्षेत्रों में नई संभावनाएं बनने की उम्मीद है। संयुक्त रक्षा उत्पादन पर जोर इन समझौतों का एक प्रमुख उद्देश्य दोनों देशों के रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना और आधुनिक रक्षा तकनीक के क्षेत्र में साझेदारी को मजबूत करना है। संयुक्त रूप से रक्षा उपकरणों के विकास एवं निर्माण से तकनीकी क्षमता, औद्योगिक सहयोग और रक्षा आपूर्ति श्रृंखला को मजबूती मिलने की संभावना है। विशेष रूप से ड्रोन और ड्रोन-रोधी तकनीक, वायु रक्षा सॉफ्टवेयर तथा मानव रहित समुद्री प्रणालियां वर्तमान सुरक्षा आवश्यकताओं के लिहाज से महत्वपूर्ण क्षेत्र माने जा रहे हैं। ऐसे में इन क्षेत्रों में सहयोग भारत और बेल्जियम के रक्षा उद्योगों के लिए नए अवसर खोल सकता है। भारत की ओर से रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता और आधुनिक तकनीक पर लगातार जोर दिया जा रहा है। ऐसे में बेल्जियम के साथ हुए ये समझौते रक्षा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय औद्योगिक साझेदारी को विस्तार देने की दिशा में महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। दोनों देशों के बीच यह सहयोग केवल सैन्य संबंधों तक सीमित न रहकर रक्षा उद्योग, तकनीक और संयुक्त उत्पादन के क्षेत्र में दीर्घकालिक साझेदारी का आधार बन सकता है।

भारत-बेल्जियम रिश्तों में नई रफ्तार

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

नई दिल्ली, 4 सितंबर 2026। भारत और बेल्जियम के बीच आर्थिक एवं रणनीतिक संबंधों को नई गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल सामने आई है। बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के बीच व्यापार, निवेश, रक्षा, तकनीक और रणनीतिक सहयोग से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई। वार्ता में दोनों देशों ने पारंपरिक आर्थिक संबंधों को नई तकनीकी साझेदारी से जोड़ने पर जोर दिया। विशेष रूप से सेमीकंडक्टर, स्वच्छ ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिज जैसे उभरते क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की संभावनाओं पर चर्चा हुई। व्यापार दोगुना करने का लक्ष्य भारत और बेल्जियम ने आने वाले पांच वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने की महत्वाकांक्षा व्यक्त की है। दोनों पक्षों ने व्यापार और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाने तथा कारोबारी प्रक्रियाओं को अधिक सुगम बनाने पर जोर दिया। भारत में बेल्जियम के निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए निवेश संबंधी प्रक्रियाओं को तेज करने और दोनों देशों के कारोबारी समुदाय के बीच संपर्क बढ़ाने की दिशा में भी सहमति बनने की बात सामने आई है। सेमीकंडक्टर से स्वच्छ ऊर्जा तक साझेदारी बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था के बीच दोनों देशों के बीच सहयोग का दायरा पारंपरिक व्यापार से आगे बढ़कर उच्च तकनीक और रणनीतिक क्षेत्रों तक पहुंच रहा है। सेमीकंडक्टर, स्वच्छ ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिज भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए अहम माने जाते हैं। ऐसे में इन क्षेत्रों में भारत और बेल्जियम के बीच सहयोग से निवेश, तकनीकी हस्तांतरण और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूती मिलने की संभावना है। भारत के लिए यूरोप के साथ तकनीकी एवं औद्योगिक साझेदारी महत्वपूर्ण है, वहीं बेल्जियम के लिए भारत का विशाल बाजार और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था नए कारोबारी अवसर उपलब्ध करा सकती है। रक्षा और समुद्री सुरक्षा पर भी जोर द्विपक्षीय वार्ता में रक्षा सहयोग को मजबूत करने के मुद्दे पर भी चर्चा हुई। प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और समुद्री सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की संभावनाओं पर दोनों पक्षों ने विचार किया। हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा का बढ़ता महत्व भारत और यूरोपीय देशों के बीच रणनीतिक सहयोग को और प्रासंगिक बनाता है। ऐसे में रक्षा एवं सुरक्षा क्षेत्र में बढ़ता संवाद दोनों देशों के व्यापक रणनीतिक संबंधों को मजबूत कर सकता है। आर्थिक रिश्तों से रणनीतिक साझेदारी तक भारत-बेल्जियम संबंध अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं रह गए हैं। तकनीक, ऊर्जा, निवेश, महत्वपूर्ण खनिज और रक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग दोनों देशों के रिश्तों को व्यापक रणनीतिक आयाम दे रहा है। हालांकि व्यापार और निवेश के लक्ष्यों को वास्तविक उपलब्धियों में बदलने के लिए नीतिगत समन्वय, निवेश सुगमता और निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण होगी। बेल्जियम के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से दोनों देशों के बीच संबंधों को नई दिशा मिलने की उम्मीद है। यदि प्रस्तावित सहयोग को समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया जाता है, तो भारत-बेल्जियम साझेदारी आने वाले वर्षों में व्यापार और तकनीकी सहयोग का महत्वपूर्ण आधार बन सकती है।

बारिश का अलर्ट, कई राज्य सतर्क

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

नई दिल्ली, 4 सितंबर 2026। मानसून की सक्रियता के बीच देश के कई राज्यों में मौसम ने करवट ली है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सहित उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में बारिश की गतिविधियां तेज होने

की संभावना को देखते हुए मौसम विभाग ने लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के पूवार्नुमान के अनुसार दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़ और पंजाब के कुछ क्षेत्रों में 4 और 5 सितंबर को भारी बारिश की संभावना बनी हुई है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी कई स्थानों पर भारी बारिश का अनुमान जताया गया है, जबकि उत्तराखंड में भारी वर्षा के साथ गरज-चमक और बिजली गिरने की संभावना को लेकर विशेष सतर्कता बरतने की सलाह दी गई है। दिल्ली-एनसीआर में दिनभर बादल छाए रहने के साथ कई इलाकों में बारिश और गरज-चमक की संभावना जताई गई है। मौसम विभाग के अनुसार कुछ स्थानों पर मध्यम से भारी बारिश भी हो सकती है। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में विशेष सतर्कता उत्तर प्रदेश में मानसूनी गतिविधियां जारी हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है। मौसम विभाग के पूवार्नुमान के अनुसार आने वाले दिनों में प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में बारिश की स्थिति बनी रह सकती है। वहीं, उत्तराखंड में भारी बारिश के साथ गरज-चमक और आकाशीय बिजली गिरने की संभावना को देखते हुए लोगों से सावधानी बरतने की अपील की गई है। पर्वतीय क्षेत्रों में तेज बारिश से भूस्खलन और स्थानीय स्तर पर आवागमन प्रभावित होने की आशंका भी बनी रहती है। जलभराव और यातायात प्रभावित होने की आशंका तेज बारिश के कारण शहरी क्षेत्रों में जलभराव की समस्या उत्पन्न हो सकती है। इससे सड़क यातायात प्रभावित होने और निचले इलाकों में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। प्रशासन और मौसम विभाग की ओर से लोगों को सलाह दी गई है कि वे स्थानीय मौसम चेतावनियों और प्रशासनिक निर्देशों पर नजर रखें। खराब मौसम के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचने और सुरक्षित स्थानों पर रहने की अपील की गई है। आकाशीय बिजली से बचाव जरूरी गरज-चमक के दौरान खुले मैदानों, ऊंचे पेड़ों और बिजली के खंभों के पास खड़े होने से बचने की सलाह दी गई है। मौसम खराब होने पर लोगों को सुरक्षित भवनों के भीतर रहने और बिजली संबंधी उपकरणों के उपयोग में आवश्यक सावधानी बरतने की जरूरत है। किसानों के लिए राहत, लेकिन अत्यधिक बारिश चिंता मानसून की बारिश किसानों के लिए राहत लेकर आ सकती है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां वर्षा की कमी रही है। हालांकि अत्यधिक बारिश वाले इलाकों में खेतों में जलभराव और फसलों को नुकसान पहुंचने की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। विशेषज्ञों के अनुसार किसानों को स्थानीय मौसम पूवार्नुमान के आधार पर कृषि कार्यों की योजना बनानी चाहिए और अत्यधिक वर्षा की स्थिति में खेतों से जल निकासी की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मौसम विभाग लगातार बदलती परिस्थितियों की निगरानी कर रहा है। ऐसे में नागरिकों से अपील की गई है कि वे अफवाहों के बजाय आधिकारिक मौसम बुलेटिन और स्थानीय प्रशासन की चेतावनियों का पालन करें।

अफसरों के सोशल मीडिया पर लगेगी लगाम!

भारतार्थ खबर Bhaaratarth.com

नई दिल्ली, 4 सितंबर 2026। केंद्र सरकार सरकारी अधिकारियों के सोशल मीडिया इस्तेमाल को लेकर जल्द सोशल मीडिया आचार संहिता लाने की तैयारी कर रही है। प्रस्तावित आचार संहिता के तहत अधिकारियों की सोशल मीडिया गतिविधियों, पोस्ट, वीडियो और सार्वजनिक टिप्पणियों को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश तय किए जाने की योजना है। सरकार की इस पहल का उद्देश्य अधिकारियों को सोशल मीडिया के इस्तेमाल के दौरान अधिक जिम्मेदार और सतर्क बनाना बताया जा रहा है। प्रस्तावित व्यवस्था में ऐसी सामग्री पर रोक लगाने के लिए दिशा-निर्देश शामिल किए जा सकते हैं, जो विवादित,

भ्रामक या सरकारी सेवा की गरिमा को प्रभावित करने वाली मानी जाए। पोस्ट और वीडियो को लेकर तय होंगे नियम सोशल मीडिया आज सरकारी अधिकारियों के लिए सूचना साझा करने और जनता से संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। अधिकारी विभिन्न प्लेटफॉर्म के जरिए सरकारी योजनाओं, उपलब्धियों और जनहित से जुड़ी सूचनाएं साझा करते हैं। ऐसे में सरकार सोशल मीडिया के जिम्मेदार इस्तेमाल को लेकर एक समान व्यवस्था विकसित करने पर विचार कर रही है। प्रस्तावित आचार संहिता के तहत अधिकारियों की सोशल मीडिया पोस्ट, वीडियो तथा अन्य सार्वजनिक गतिविधियों को लेकर क्या स्वीकार्य होगा और किन गतिविधियों से बचना होगा, इसे स्पष्ट किए जाने की संभावना है। भ्रामक सामग्री पर रोक लगाने की कोशिश सरकार का जोर विशेष रूप से भ्रामक अथवा विवाद उत्पन्न करने वाली सामग्री पर नियंत्रण और अधिकारियों की सार्वजनिक भूमिका के अनुरूप सोशल मीडिया व्यवहार सुनिश्चित करने पर बताया जा रहा है। हालांकि, प्रस्तावित नियमों का अंतिम स्वरूप और इसके लागू होने की प्रक्रिया सरकार की ओर से जारी होने वाले आधिकारिक दिशा-निर्देशों के बाद ही स्पष्ट होगी। नई व्यवस्था लागू होने पर अधिकारियों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल को लेकर जिम्मेदारियों और सीमाओं का एक निर्धारित ढांचा सामने आ सकता है। इससे सरकारी सेवा में सोशल मीडिया के उपयोग को अधिक व्यवस्थित और जवाबदेह बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

काबिनी पानी विवाद पर दो दिन में समाधान का भरोसा

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। किसानों की खड़ी फसलों को बचाने और वन्यजीवों, पशु-पक्षियों के लिए पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से काबिनी

जलाशय से आवश्यकतानुसार पानी छोड़ने के मुद्दे पर जल संसाधन मंत्री ने दो दिनों के भीतर गंभीर कार्रवाई कर समाधान निकालने का भरोसा दिलाया है। नवनिर्मित कर्नाटक स्टेट वॉटर यूजर्स कोऑपरेटिव सोसाइटीज स्टेट लेवल समिट महामंडल की पहली बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंत्री ने किसानों और संगठन के प्रतिनिधियों द्वारा उठाई गई विभिन्न मांगों पर त्वरित प्रतिक्रिया दी। काबिनी क्षेत्र में पानी की कमी का मुद्दा उठा बैठक में काबिनी क्षेत्र में पानी की कमी और फसलों पर मंडरा रहे संकट का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया। प्रतिनिधियों ने सिंचाई के लिए जलाशय से पानी छोड़े जाने की मांग रखी। मंत्री ने कहा कि खेती की जरूरतों को देखते हुए पानी उपलब्ध कराने के संबंध में संबंधित अधिकारियों और मैसूर के प्रभारी मंत्री से चर्चा की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि नदी और नहरों में पर्याप्त पानी नहीं पहुंचने की स्थिति में किसानों के साथ-साथ वन्यजीवों के लिए भी कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। मंत्री ने भरोसा दिलाया कि मुख्य अभियंता से चर्चा कर दो अथवा आवश्यकतानुसार अधिक जल आपूर्ति के विकल्प पर विचार किया जाएगा और इस समस्या के समाधान के लिए दो दिनों के भीतर ठोस कदम उठाए जाएंगे। अधिकारियों को पानी प्रबंधन के निर्देश बैठक के दौरान मंत्री ने संबंधित जिला प्रशासन और अधिकारियों को नहरों में बहने वाले पानी के प्रभावी प्रबंधन के निर्देश दिए। उन्होंने फसलों को बचाने के लिए आवश्यक क्षेत्रों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था करने पर जोर दिया। मांड्या जिले की कौडले और सोमनहल्ली उप-शाखा नहरों में भी पानी छोड़े जाने को लेकर अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए गए। वित्तीय सहायता पर पहले होगा पूरा आकलन महामंडल के प्रतिनिधियों ने नवगठित संगठन के लिए कार्यालय, ग्रुप-डी कर्मचारियों और वित्तीय सहायता की मांग भी रखी। इस पर मंत्री ने कहा कि बिना उचित योजना, वित्तीय आकलन और खर्च के स्पष्ट विवरण के सरकारी अनुदान को मंजूरी देना संभव नहीं है। उन्होंने आश्वासन दिया कि संगठन की मांगों पर सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव और वित्त विभाग के साथ चर्चा कर आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा। मंत्री ने संगठन को वित्तीय अनुशासन अपनाने की सलाह देते हुए कहा कि संस्था की आय और संसाधनों का उपयोग उसके विकास और गतिविधियों को मजबूत करने में किया जाना चाहिए। 25 सितंबर को होगी महासभा संगठन के पदाधिकारियों ने 25 सितंबर तक महासभा आयोजित करने और उसमें मंत्री की अध्यक्षता की मांग रखी। इस पर मंत्री ने महासभा की तिथि 25 सितंबर निर्धारित करने पर सहमति जताई और उसमें स्वयं शामिल होने का आश्वासन दिया। बैठक में नदियों से गाद निकालने का कार्य जल उपयोगकर्ता संघों को दिए जाने तथा गाद निकासी के लिए अनुदान बढ़ाने की मांग भी रखी गई। प्रतिनिधियों ने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने के लिए काडा निदेशक की नियुक्ति तथा सलाहकार समिति में विषय विशेषज्ञों और सेवानिवृत्त अधिकारियों को शामिल करने का सुझाव दिया। बैठक में महामंडल के उपाध्यक्ष नागन्ना, राज्य सचिव कुलकर्णी, कावेरी सिंचाई निगम के प्रबंध निदेशक महेश सहित विभिन्न पदाधिकारी और प्रतिनिधि उपस्थित रहे। किसानों के लिए सिंचाई जल उपलब्ध कराने और जल उपयोगकर्ता संगठनों को मजबूत बनाने से जुड़ी मांगों पर मंत्री के आश्वासन को लेकर अब संबंधित क्षेत्रों के किसानों की निगाहें आगामी प्रशासनिक कार्रवाई पर टिकी हैं।

अल-नीनो की दस्तक: मौसम की चेतावनी अब खाद्य सुरक्षा का सवाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

दुनिया इस समय युद्ध, आर्थिक अस्थिरता और भू-राजनीतिक तनाव से जूझ रही है। इसी बीच प्रकृति की ओर से सामने आई एक और गंभीर चेतावनी को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है। प्रशांत महासागर में तेजी से मजबूत हो रहा अल-नीनो आने वाले महीनों में दुनिया के मौसम, कृषि, जल उपलब्धता और खाद्य सुरक्षा पर व्यापक असर डाल सकता है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) के अनुसार 2026 में विकसित हो रहा अल-नीनो अगस्त-अक्टूबर के दौरान मजबूत होने की दिशा में है और इससे दुनिया के कई हिस्सों में सामान्य से अधिक तापमान तथा वर्षा के बदलते स्वरूप की आशंका है। यह महज मौसम विज्ञान की कोई तकनीकी घटना नहीं है। अल-नीनो को यदि समय रहते समझकर तैयारी नहीं की गई तो इसका प्रभाव किसान से लेकर उपभोक्ता तक और स्थानीय बाजार से लेकर वैश्विक खाद्य व्यापार तक दिखाई दे सकता है। इसलिए आज आवश्यकता भय पैदा करने की नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चेतावनियों को नीति और जन-तैयारी में बदलने की है। क्या है अल-नीनो और क्यों बढ़ी चिंता? अल-नीनो प्रशांत महासागर के भूमध्यरेखीय क्षेत्र में समुद्र की सतह के असामान्य रूप से गर्म होने से जुड़ी जलवायु घटना है। इसके कारण वायुमंडलीय परिसंचरण और वर्षा के वैश्विक स्वरूप में बदलाव आ सकता है। इसका प्रभाव हर क्षेत्र में एक जैसा नहीं होता। कहीं सूखे का खतरा बढ़ता है तो कहीं अत्यधिक वर्षा और बाढ़ की संभावना पैदा हो सकती है। WMO ने जून में ही अल-नीनो के विकसित होने की संभावना को बहुत अधिक बताया था और कहा था कि इसके नवंबर तक जारी रहने की संभावना 90 प्रतिशत या उससे अधिक हो सकती है। संगठन ने यह भी स्पष्ट किया था कि घटना की चरम तीव्रता और समय को लेकर अनिश्चितता बनी रहती है। यही वैज्ञानिक सावधानी महत्वपूर्ण है। अल-नीनो के प्रभाव को लेकर निश्चित भविष्यवाणी करने के बजाय संभावित जोखिमों के आधार पर तैयारी करना अधिक समझदारी होगी। भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती मानसून भारत के लिए अल-नीनो की चर्चा सीधे मानसून से जुड़ जाती है। ऐतिहासिक रूप से अल-नीनो के कई घटनाक्रम भारतीय मानसून को प्रभावित कर चुके हैं, हालांकि प्रत्येक अल-नीनो का प्रभाव समान नहीं होता। इस बार चिंता इसलिए बढ़ी है क्योंकि भारत में अगस्त 2026 की वर्षा सामान्य से कम रही और भारतीय मौसम विभाग ने सितंबर में भी सामान्य से कम वर्षा का अनुमान व्यक्त किया है। रॉयटर्स के अनुसार अगस्त में वर्षा में करीब 16 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई और सितंबर की वर्षा दीर्घकालिक औसत के 91 प्रतिशत से कम रहने का अनुमान है। यह स्थिति कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। खरीफ की अनेक फसलें इस समय विकास के निर्णायक चरण में होती हैं। यदि वर्षा का वितरण असमान रहा तो कहीं फसल सूखे की मार झेल सकती है और कहीं अचानक अत्यधिक बारिश खेतों तथा ग्रामीण बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा सकती है। अर्थात चुनौती केवल कम बारिश नहीं है। असली चुनौती है अनिश्चित और असमान बारिश। किसान के लिए मौसम का बदलता मिजाज सबसे बड़ा जोखिम भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में आज भी मानसून की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हुआ है, लेकिन देश के अनेक कृषि क्षेत्रों में वर्षा पर निर्भरता बनी हुई है। अल-नीनो के कारण यदि वर्षा का समय बदलता है, लंबे शुष्क अंतराल आते हैं या अचानक तेज बारिश होती है तो किसान के सामने कई समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। बुआई का समय प्रभावित हो सकता है, फसल की उत्पादकता घट सकती है और सिंचाई की मांग बढ़ सकती है। कृषि विशेषज्ञों के लिए यह केवल मौसम का प्रश्न नहीं, बल्कि फसल योजना, जल प्रबंधन और बाजार नीति का भी प्रश्न है। सरकारों को ऐसे समय में मौसम आधारित कृषि सलाह को गांव-गांव तक पहुंचाना चाहिए। किसानों को केवल बारिश की सामान्य भविष्यवाणी नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर अगले कुछ दिनों और सप्ताहों के संभावित मौसम के अनुसार फसल प्रबंधन संबंधी सलाह मिलनी चाहिए। खाद्य महंगाई की आहट को पहले ही समझना होगा मौसम और महंगाई का संबंध सीधा दिखाई नहीं देता, लेकिन दोनों के बीच गहरा संबंध है। यदि किसी महत्वपूर्ण फसल का उत्पादन घटता है तो बाजार में आपूर्ति कम हो सकती है। इससे कीमतों पर दबाव बढ़ सकता है। दालें, तिलहन, सब्जियां और अन्य कृषि उत्पाद मौसम की अनिश्चितता से प्रभावित हो सकते हैं। खाद्य महंगाई का असर सबसे पहले निम्न और मध्यम आय वाले परिवारों पर पड़ता है, क्योंकि उनकी आय का बड़ा हिस्सा भोजन पर खर्च होता है। इसलिए अल-नीनो को केवल मौसम विभाग की चेतावनी मानना पर्याप्त नहीं होगा। कृषि मंत्रालय, खाद्य मंत्रालय, राज्य सरकारें, मंडियां और उपभोक्ता मामलों से जुड़े संस्थानों को भी संभावित परिस्थितियों के लिए पहले से योजना बनानी होगी। जल संकट भी बढ़ सकता है अल-नीनो का एक दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव जल संसाधनों पर पड़ सकता है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में जलाशयों, भूजल और पेयजल स्रोतों पर दबाव बढ़ सकता है। दूसरी ओर, जहां अत्यधिक वर्षा होती है, वहां पानी का बड़ा हिस्सा तेजी से बह जाने के कारण उसका पर्याप्त संचयन नहीं हो पाता। यह विरोधाभास हमारी जल नीति की कमजोरी भी सामने लाता है। भारत को वर्षा जल संचयन, छोटे जलाशयों, तालाबों के पुनर्जीवन और भूजल पुनर्भरण को केवल पर्यावरणीय कार्यक्रम न मानकर राष्ट्रीय जल सुरक्षा की रणनीति बनाना होगा। बारिश का पानी बचाना और सूखे समय में उसका उपयोग करना भविष्य की अनिवार्यता है। अल-नीनो का अर्थ हर जगह सूखा नहीं अल-नीनो को लेकर एक सामान्य धारणा है कि इसके आते ही हर जगह सूखा पड़ता है। यह सही नहीं है। हटड के अनुसार अल-नीनो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग प्रभाव डाल सकता है। कहीं सामान्य से अधिक बारिश हो सकती है, तो कहीं सूखे और गर्मी का जोखिम बढ़ सकता है। संगठन ने अगस्त-अक्टूबर 2026 के लिए दुनिया के कई हिस्सों में सामान्य से अधिक तापमान और वर्षा के स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव की संभावना जताई है। इसलिए नीति निर्धारण में एक ही सूत्र सभी क्षेत्रों पर लागू नहीं किया जा सकता। स्थानीय मौसम, समुद्री परिस्थितियां, हिंद महासागर की स्थिति और अन्य जलवायु कारकों को साथ लेकर क्षेत्रवार योजना बनानी होगी। जलवायु परिवर्तन संकट को और जटिल बना रहा है यहां एक और महत्वपूर्ण तथ्य समझना आवश्यक है। अल-नीनो स्वयं मानव-जनित जलवायु परिवर्तन का पर्याय नहीं है। हटड के अनुसार जलवायु परिवर्तन से अल-नीनो की आवृत्ति या तीव्रता बढ़ने का स्पष्ट प्रमाण नहीं है, लेकिन गर्म होती पृथ्वी इसके प्रभावों को अधिक गंभीर बना सकती है। यही कारण है कि आज दुनिया को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है—एक ओर प्राकृतिक जलवायु चक्र और दूसरी ओर मानव गतिविधियों से बढ़ता वैश्विक तापमान। जब पहले से गर्म वातावरण में अत्यधिक गर्मी, भारी बारिश या सूखे जैसी घटनाएं होती हैं तो उनका सामाजिक और आर्थिक नुकसान बढ़ सकता है। दुनिया के लिए खाद्य सुरक्षा की परीक्षा अल-नीनो का प्रभाव किसी एक देश की सीमा में नहीं रुकता। यदि दुनिया के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में उत्पादन प्रभावित होता है तो वैश्विक बाजार में अनाज, तिलहन और अन्य खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर असर पड़ सकता है। खाद्य निर्यातक देश अपनी घरेलू जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए निर्यात पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। इससे आयात पर निर्भर गरीब देशों की स्थिति और कठिन हो सकती है। यही कारण है कि खाद्य सुरक्षा अब केवल कृषि नीति का विषय नहीं रही। यह राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक कूटनीति का भी हिस्सा बन चुकी है।

गुरुवाणी, सामाजिक चेतना और कलबी समाज का भविष्य

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

भारतीय संस्कृति में पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि आत्मचिंतन, सामाजिक जागरण और जीवन-मूल्यों को पुनः स्मरण करने के अवसर भी हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ऐसा ही एक पर्व है, जो धर्म, कर्तव्य, प्रेम, नीति, कर्म और लोककल्याण का संदेश देता है। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन भारतीय समाज के लिए केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप विवेकपूर्ण निर्णय लेने और सत्य के पक्ष में खड़े रहने की प्रेरणा भी है। इसी दृष्टि से कृष्ण जन्माष्टमी का अवसर समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने जीवन, परिवार और सामाजिक दायित्वों पर विचार करने का अवसर हो सकता है। कलबी समाज के संदर्भ में भी यह पर्व केवल उत्सव तक सीमित न रहे, बल्कि सामाजिक एकता, शिक्षा, नैतिकता, संगठन और गुरुवाणी के जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का माध्यम बने—यही समय की अपेक्षा है। समाज की पहचान केवल संख्या से नहीं बनती भारत विविधताओं का देश है। यहां असंख्य जातियां, समुदाय, भाषाएं और सांस्कृतिक परंपराएं मिलकर राष्ट्र की सामाजिक संरचना को समृद्ध बनाती हैं। प्रत्येक समाज की अपनी ऐतिहासिक यात्रा, सामाजिक विशेषताएं और विकास की चुनौतियां रही हैं। कलबी समाज भी भारत के विभिन्न हिस्सों में अपनी उपस्थिति और सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं के कारण एक विशिष्ट पहचान रखता है। राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, बिहार तथा दक्षिण भारत के कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, केरल और तमिलनाडु सहित विभिन्न क्षेत्रों में समाज के लोग स्थायी निवासी अथवा प्रवासी के रूप में जीवनयापन करते हैं। समाज की बड़ी पहचान कृषि, श्रम, व्यवसाय और आत्मनिर्भरता से जुड़ी रही है। खेतों से लेकर व्यापारिक गतिविधियों तक, अनेक परिवारों ने अपनी मेहनत और अनुशासन के बल पर सामाजिक और आर्थिक प्रगति का मार्ग बनाया है। लेकिन किसी भी समाज की वास्तविक प्रतिष्ठा केवल उसकी जनसंख्या या आर्थिक क्षमता से तय नहीं होती। समाज की पहचान उसके चरित्र, शिक्षा, सामाजिक व्यवहार, पारिवारिक संस्कार और सामूहिक जिम्मेदारी से बनती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने समाज की उपलब्धियों पर गर्व अवश्य करें, लेकिन आत्ममुग्धता में न पड़ें। समाज की प्रशंसा तभी सार्थक है, जब उसके सदस्य निरंतर आत्मसुधार और सामाजिक विकास के लिए प्रयत्नशील रहें। गुरु परंपरा का अर्थ केवल श्रद्धा नहीं, आचरण भी है भारतीय जीवन दर्शन में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। गुरु केवल धार्मिक शिक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन के अंधकार में विवेक और ज्ञान का प्रकाश दिखाने वाला मार्गदर्शक भी होता है। किसी संत या गुरु के प्रति श्रद्धा का सर्वोच्च स्वरूप केवल जयकारों, समारोहों अथवा धार्मिक आयोजनों में भाग लेने तक सीमित नहीं हो सकता। सच्ची गुरु-भक्ति का अर्थ गुरु द्वारा बताए गए जीवन-मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारना है। कलबी समाज की धार्मिक और सामाजिक चेतना में परम आराध्य गुरु महाराज श्री श्री 1008 श्री राजाराम जी महाराज की शिक्षाओं और गुरुवाणी का विशेष स्थान बताया जाता है। उनके जीवन और संदेशों से प्रेरणा लेने वाले समाज के लोगों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे श्रद्धा को व्यवहार से जोड़ें। यदि गुरुवाणी सत्य बोलने की प्रेरणा देती है, तो समाज को सत्यनिष्ठ होना चाहिए। यदि गुरुवाणी सेवा का संदेश देती है, तो समाज के सक्षम लोगों को कमजोर वर्गों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। यदि गुरुवाणी

प्रेषक, लेखकः किशनाराम पटेल
मोबाइल नंबरः 9414061005
(गुरुवाणी प्रचारक एवं सामाजिक विश्लेषक)

शिक्षा का महत्व बताती है, तो प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने की सामूहिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए। यदि गुरुवाणी सामाजिक सद्भाव का मार्ग दिखाती है, तो समाज को आंतरिक मतभेदों, व्यक्तिगत अहंकार और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा से ऊपर उठना होगा। यही गुरु-भक्ति की वास्तविक कसौटी है। श्रीकृष्ण का संदेशः कर्म और विवेक का संतुलन श्रीकृष्ण के जीवन का सबसे बड़ा संदेश कर्म और विवेक का संतुलन है। महाभारत के युद्धक्षेत्र में अर्जुन के सामने उत्पन्न संशय को दूर करते हुए श्रीकृष्ण ने कर्तव्य और कर्म की महत्ता को स्पष्ट किया। आज समाज भी एक प्रकार के सामाजिक कुरुक्षेत्र से गुजर रहा है। एक ओर शिक्षा और तकनीक के नए अवसर हैं, दूसरी ओर सामाजिक असमानताएं और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। एक ओर युवा वर्ग के पास नई संभावनाएं हैं, दूसरी ओर रोजगार, कौशल और आर्थिक सुरक्षा की चुनौतियां भी हैं। ऐसे समय में केवल अतीत के गौरव का स्मरण पर्याप्त नहीं है। समाज को भविष्य की तैयारी करनी होगी। कलबी समाज सहित देश के प्रत्येक समुदाय को यह समझना होगा कि 21वीं सदी में सामाजिक प्रतिष्ठा का सबसे मजबूत आधार शिक्षा, कौशल, ईमानदारी, तकनीकी क्षमता और संगठनात्मक अनुशासन है। आज का युवा केवल पारंपरिक व्यवसायों तक सीमित नहीं रह सकता। कृषि के साथ आधुनिक कृषि तकनीक, व्यवसाय के साथ डिजिटल अर्थव्यवस्था, शिक्षा के साथ कौशल विकास और रोजगार के साथ उद्यमिता को अपनाना समय की मांग है। श्रीकृष्ण का कर्मयोग हमें यही सिखाता है कि परिस्थितियों की शिकायत करने के बजाय अपनी क्षमता और कर्तव्य के माध्यम से परिवर्तन का मार्ग बनाया जाए। संगठनः शक्ति भी, जिम्मेदारी भी किसी भी समाज की प्रगति में सामाजिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कलबी समाज में विभिन्न स्तरों पर अनेक संगठन कार्यरत हैं। अखिल भारतीय आंजणा समाज महासभा, अखिल भारतीय आंजणा युवा महासंगठन, संत श्री राजाराम जी युवा जागृति मंच, शिकारपुरा सहित देशभर में सक्रिय विभिन्न क्षेत्रीय और स्थानीय सामाजिक संगठन समाज को संगठित करने और जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं। सामाजिक संगठन समाज की सामूहिक शक्ति होते हैं। लेकिन संगठन की सफलता केवल पदाधिकारियों की संख्या, बैठकों या कार्यक्रमों से नहीं मापी जा सकती। सच्चा सामाजिक संगठन वह है, जो आम व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए। यदि कोई संगठन गरीब विद्यार्थी को शिक्षा में सहायता देता है, तो वह सामाजिक सेवा है। यदि संगठन बेरोजगार युवाओं को कौशल और रोजगार के अवसरों की जानकारी देता है, तो वह वास्तविक विकास है। यदि संगठन समाज की बेटियों की शिक्षा और सुरक्षा के लिए कार्य करता है, तो वह सामाजिक जागरण है। यदि संगठन आपसी विवादों को संवाद से सुलझाने का प्रयास करता है, तो वह सामाजिक परिपक्वता है। और यदि संगठन केवल सम्मान समारोहों तक सीमित न रहकर प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करता है, तो वह भविष्य निर्माण का कार्य करता है। समाज के विभिन्न संगठनों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि संगठनात्मक विविधता प्रतिस्पर्धा या विभाजन का कारण न बने। अलग-अलग संगठन होने के बावजूद समाज के बड़े मुद्दों पर सामूहिक दृष्टिकोण आवश्यक है। एकता का अर्थ एकरूपता नहीं किसी भी बड़े समाज में विचारों की विविधता स्वाभाविक है। अलग-अलग क्षेत्रों, पीढ़ियों और सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण मतभेद हो सकते हैं। लेकिन मतभेद को मनभेद बनने देना समाज के लिए हानिकारक है। आज सोशल मीडिया के दौर में छोटी-सी बात भी बड़े विवाद का रूप ले सकती है। व्यक्तिगत असहमति को सामाजिक संघर्ष बना देना आसान हो गया है। ऐसे समय में समाज के वरिष्ठ नागरिकों, धार्मिक मार्गदर्शकों और युवा नेतृत्व की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। एकता का अर्थ यह नहीं कि हर व्यक्ति एक जैसा सोचे। एकता का वास्तविक अर्थ है—मतभेदों के बावजूद समाज के हित में साथ चलना। कलबी समाज के सामने भी यही चुनौती है कि संगठन, परिवार और व्यक्ति के स्तर पर संवाद की संस्कृति को मजबूत किया जाए। किसी व्यक्ति की आलोचना करने से पहले उसके योगदान को देखा जाए और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर समाज के दीर्घकालीन हितों को प्राथमिकता दी जाए। वर्तमान गादीपति का मार्गदर्शन और समाज की अपेक्षाएं शिकारपुरा धाम की धार्मिक परंपरा से जुड़े वर्तमान गादीपति महंत श्री श्री 108 श्री दयाराम जी महाराज समय-समय पर अपने प्रवचनों और उद्बोधनों के माध्यम से समाज को धार्मिक और नैतिक मूल्यों का संदेश देते रहे हैं। धार्मिक नेतृत्व की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका केवल परंपराओं के संरक्षण तक सीमित नहीं होती। समाज में नैतिक चेतना, सद्भाव, शिक्षा, सेवा और सकारात्मक सोच का वातावरण बनाना भी उतना ही आवश्यक है। आज जब समाज तेजी से बदल रहा है, तब धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व को नई पीढ़ी के साथ संवाद बढ़ाना होगा। युवाओं को केवल यह नहीं बताया जाना चाहिए कि उन्हें अपनी परंपराओं पर गर्व करना चाहिए, बल्कि यह भी समझाया जाना चाहिए कि आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और सामाजिक जिम्मेदारी को अपनाना भी उसी गौरव का हिस्सा है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष नहीं, बल्कि संतुलन आवश्यक है। गुरुवाणी का उद्देश्य भी तभी सार्थक होगा, जब वह जीवन की वास्तविक समस्याओं के समाधान का मार्गदर्शन करे और व्यक्ति को बेहतर नागरिक बनने के लिए प्रेरित करे। शिक्षा को सर्वोच्च सामाजिक आंदोलन बनाना होगा किसी भी समाज के विकास का सबसे विश्वसनीय मार्ग शिक्षा है। आज समाज के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि कितने लोग सम्मानित हुए, बल्कि यह होना चाहिए कि कितने बच्चे उच्च शिक्षा तक पहुंच रहे हैं। कितनी बेटियां विद्यालय छोड़ रही हैं? कितने युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं? कितने विद्यार्थी आर्थिक कठिनाइयों के कारण अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने होंगे। कलबी समाज के सामाजिक संगठनों को प्रत्येक जिले और तहसील स्तर पर प्रतिभाशाली तथा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों की पहचान करनी चाहिए। छात्रवृत्ति, मार्गदर्शन, पुस्तकालय, कोचिंग सहायता और करियर परामर्श जैसी योजनाओं को सामाजिक प्राथमिकता बनाना होगा। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के अवसर उपलब्ध कराना समय की आवश्यकता है। आज एक डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी, सैनिक, उद्यमी और कुशल किसान—सभी समाज की प्रगति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इसलिए शिक्षा की परिभाषा केवल डिग्री तक सीमित नहीं होनी चाहिए। कौशल, चरित्र और रोजगार क्षमता भी शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। महिलाओं की भागीदारी के बिना विकास अधूरा समाज की प्रगति में महिलाओं की भूमिका को केंद्र में रखना आवश्यक है। आज बेटियां शिक्षा, प्रशासन, विज्ञान, खेल, व्यवसाय और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल कर रही हैं। ऐसे में किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब उसकी बेटियों को समान अवसर, शिक्षा और सम्मान मिले। कलबी समाज के परिवारों और संगठनों को बेटियों की उच्च शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। बालिकाओं के लिए सुरक्षित शिक्षा वातावरण, करियर मार्गदर्शन और आर्थिक सहयोग की योजनाएं समाज के भविष्य में निवेश हैं। जिस समाज की महिलाएं शिक्षित और आत्मनिर्भर होती हैं, वह समाज सामाजिक रूप से अधिक मजबूत होता है। गुरुवाणी और धार्मिक मूल्यों की वास्तविक व्याख्या भी यही होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति—चाहे वह महिला हो या पुरुष—सम्मान, अवसर और गरिमा के साथ जीवन जी सके। कृषि से आधुनिक अर्थव्यवस्था तक कलबी समाज की पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार कृषि रहा है। लेकिन आज कृषि का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। जल संकट, बढ़ती लागत, बाजार की अनिश्चितता और जलवायु परिवर्तन किसानों के सामने नई चुनौतियां लेकर आए हैं। इसलिए युवा पीढ़ी को केवल पारंपरिक खेती तक सीमित रखने के बजाय आधुनिक कृषि, कृषि विज्ञान, ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, कृषि विपणन और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों की ओर भी प्रेरित करना चाहिए। सामाजिक संगठन किसानों के लिए विशेषज्ञों के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। सफल किसानों के अनुभवों को साझा किया जा सकता है। युवा उद्यमियों को कृषि आधारित स्टार्टअप के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यह समय परंपरा को छोड़ने का नहीं, बल्कि परंपरा को आधुनिक ज्ञान से मजबूत करने का है। श्रद्धा से सेवा और सेवा से समाज निर्माण धार्मिक आयोजन समाज को जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। जन्माष्टमी, गुरु पूर्णिमा, संत स्मृति दिवस और अन्य धार्मिक अवसर समाज में सामूहिकता की भावना पैदा करते हैं। लेकिन इन आयोजनों की वास्तविक सफलता तभी होगी, जब इनके साथ सेवा कार्य भी जुड़े हों। क्यों न प्रत्येक बड़े धार्मिक आयोजन के अवसर पर रक्तदान शिविर आयोजित हों? क्यों न जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराई जाए? क्यों न गरीब परिवारों के लिए सहायता कोष बनाया जाए? क्यों न पर्यावरण संरक्षण और जल बचाने का सामूहिक संकल्प लिया जाए? धार्मिक आस्था और सामाजिक सेवा का यह मेल समाज को अधिक मानवीय और मजबूत बना सकता है। आलोचना से नहीं, आत्मचिंतन से होगा विकास समाज के विकास में सबसे बड़ी बाधा कई बार बाहरी परिस्थितियां नहीं, बल्कि आंतरिक कमजोरियां होती हैं। जातीय श्रेष्ठता की भावना, संगठनात्मक प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत विवाद और नेतृत्व के प्रति अनावश्यक खींचतान समाज की ऊर्जा को कमजोर करती है। कलबी समाज को भी समय-समय पर आत्मचिंतन करना चाहिए। हमें यह पूछना चाहिए कि क्या हमारे संगठन वास्तव में समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहे हैं? क्या हमारी युवा पीढ़ी समाज की गतिविधियों से जुड़ रही है? क्या हम अपनी बेटियों की शिक्षा को पर्याप्त महत्व दे रहे हैं? क्या आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सहयोग मिल रहा है? क्या हम गुरु के संदेशों को केवल सुनते हैं या उन्हें जीवन में अपनाते भी हैं? इन प्रश्नों का ईमानदार उत्तर ही समाज को आगे बढ़ाएगा। जन्माष्टमी का संकल्पः बेहतर इंसान बनने का प्रयास कृष्ण जन्माष्टमी का सबसे बड़ा संदेश शायद यही है कि जीवन में परिस्थितियां चाहे जितनी कठिन हों, व्यक्ति को अपने कर्तव्य और मूल्यों से पीछे नहीं हटना चाहिए। कलबी समाज के लिए भी यह अवसर केवल धार्मिक उत्सव का नहीं, बल्कि सामाजिक संकल्प का होना चाहिए। संकल्प लिया जाए कि समाज का कोई प्रतिभाशाली विद्यार्थी आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा। संकल्प लिया जाए कि बेटियों की शिक्षा और सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। संकल्प लिया जाए कि समाज के विभिन्न संगठन एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी बनेंगे। संकल्प लिया जाए कि कृषि और व्यवसाय से जुड़े परिवार आधुनिक ज्ञान और तकनीक को अपनाएंगे। संकल्प लिया जाए कि समाज की युवा शक्ति को सकारात्मक दिशा दी जाएगी। और सबसे महत्वपूर्ण संकल्प यह हो कि गुरुवाणी को केवल धार्मिक वचन मानकर नहीं, बल्कि जीवन के नैतिक मार्गदर्शन के रूप में अपनाया जाएगा। गुरुवाणी का वास्तविक अर्थ गुरुवाणी का वास्तविक सम्मान तभी होगा, जब वह हमारे व्यवहार में दिखाई दे। घर में संस्कार हों। परिवार में प्रेम हो। समाज में एकता हो। व्यवहार में ईमानदारी हो। कार्य में परिश्रम हो। विचारों में सकारात्मकता हो। और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी हो। गुरु के प्रति श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति तभी सच्चा गुरु भक्त कहलाएगा, जब उसका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा बने। आज आवश्यकता किसी एक संगठन, व्यक्ति अथवा क्षेत्र के विकास की नहीं, बल्कि पूरे समाज को नई दिशा देने की है। कलबी समाज की अगली यात्रा शिक्षा, सामाजिक चेतना, आर्थिक आत्मनिर्भरता और नैतिक नेतृत्व के मार्ग से होकर जाएगी। निष्कर्षः श्रद्धा को संकल्प में बदलने का समय श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हमें यह अवसर देता है कि हम उत्सव के साथ आत्ममंथन भी करें। समाज की गौरवशाली परंपराओं को स्मरण करते हुए हमें भविष्य की चुनौतियों के लिए भी तैयार होना होगा। परम आराध्य गुरु महाराज श्री श्री 1008 श्री राजाराम जी महाराज की शिक्षाओं और गुरुवाणी से प्रेरणा लेने वाले समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि गुरु के संदेश का सबसे बड़ा सम्मान उसके व्यवहारिक पालन में है। वर्तमान गादीपति महंत श्री श्री 108 श्री दयाराम जी महाराज सहित समाज के धार्मिक मार्गदर्शकों, वरिष्ठ नागरिकों, सामाजिक संगठनों और युवा पीढ़ी के सामूहिक प्रयास से समाज नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। लेकिन इसके लिए श्रद्धा के साथ संकल्प, संगठन के साथ सेवा, परंपरा के साथ आधुनिकता और गौरव के साथ आत्मचिंतन आवश्यक है। आज जन्माष्टमी के पावन अवसर पर यदि कलबी समाज यह दृढ़ निश्चय करे कि वह गुरुवाणी के जीवन-मूल्यों को अपनाकर शिक्षा, सेवा, सामाजिक सद्भाव और राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएगा, तो यही सबसे बड़ी गुरु-दक्षिणा होगी। नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की। गुरु के संदेशों को जीवन का मार्ग बनाना और समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की रोशनी पहुंचाना ही सच्चे अर्थों में जागृत, संगठित और उत्तरदायी समाज की पहचान है।

पुस्तक समीक्षा -

पुस्तक – मुक्त परिंदे मुक्तक संग्रह

रचनाकार - श्री रामदरश पांडेय 'विश्वासी'
समीक्षक- लालबहादुर चौरसिया 'लाल'

मुक्त परिंदे पुस्तक जनपद अंबेडकरनगर के ख्यातिलब्ध रचनाकार, हास्य के पुरोधा कवि श्री रामदरस पांडेय 'विश्वासी' जी की सद्यःप्रकाशित कृति है। यह एक पुस्तक ही नहीं, वरन एक ऐसी पुष्प वाटिका है जिसमें विविध रंग व विविध गंध के पुष्प अपनी आभा से साहित्य उपवन को आप्लित कर रहे हैं। पुस्तक मुक्त परिंदे मुक्तकों का एक पिटारा है। एक सौ बारह पृष्ठों में फैली, पूरे के पूरे पांच सौ सात उत्कृष्ट मुक्तकों से लबरेज यह पुस्तक विशिष्ट है। पुस्तक का

नाम करण ही पुस्तक की प्रासंगिकता को व्याख्यायित करने में सक्षम है। मुक्तक मूल रूप से चार पंक्तियों की एक सूक्ष्म कविता होती है। इन्हीं चार पंक्तियों में कवि अपनी पूरी बात कहने का सफल प्रयास करता है। श्री विश्वासी जी ने भी वही किया है। वो भी पूरा सलीके के साथ। विश्वासी जी मूलतः हास्य कवि हैं। किंतु इनकी मुक्त परिंदे पुस्तक में हास्य का बिल्कुल समावेश नहीं है। जीवन के विभिन्न आयामों को छूने का भरपूर सार्थक प्रयास किया गया है। श्री विश्वासी जी ने समाज में जो कुछ देखा उसी को अपने मुक्तकों में उतारा वो भी बिल्कुल साफगोई के साथ। एक बानगी के तौर पर यह मुक्तक बिल्कुल गणित के सूत्र की तरह शत-प्रतिशत सत्यता के साथ आज के स्वार्थी रिश्तो को परिभाषित करता हुआ है- मुसीबत में अपने लोग नाता तोड़ लेते हैं, जो दिल के पास होते हैं वहीं मुख मोड़ लेते हैं, गजब इंसान की फितरत उन्हें गैरों से क्या लेना, परिंदे पालतू आंगन में आना छोड़ देते हैं।। वास्तव में जब एक कलमकार समाज की पीड़ा को अपनी कलम से कागज पर उकेरता है तो अपने साहित्यकार होने का पूरा का पूरा फर्ज अदा कर देता है। जब कविता में समाज को एक दिशा देने की बात कही गई हो। एक ऐसे दीप को प्रज्वलित करने की बात कही गई हो जिसके प्रकाश में संपूर्ण मानवता प्रकाशमान होती हो। तब समझिए कि कवि ने कवि धर्म का पालन निश्चित रूप से ईमानदारी के साथ किया है। वही बात विश्वासी जी के इस मुक्तक में देखें- करके सिर्फ निवालों की बात कर।। आज के इस भौतिक युग में कवि की निगाहें मानवीय संबंधों पर टिकी हैं। कवि उस समय अत्यंत निराश होता है जब एक बूढ़ी मां के चार चार बेटे उसे संभालने से इंकार कर देते हैं तो विश्वास ही जी की कलम बोल पड़ती हैं- जीवन में दुआ मां की खाली नहीं जाती, यह बात भी भगवान से टाली नहीं जाती, अकेले एक मां ही चार बेटों को पाल लेती है, उन्हीं चारों से एक मां कभी पाली नहीं जाती।। श्री विश्वासी जी के मुक्तक शब्द संधान, भाव, बिंब, अभिव्यंजना से परिपूर्ण है। कहीं प्रेम की पराकाष्ठा है तो कहीं विरह का महासैलाब भी है। एक विरहिणी के व्यथा

शिक्षक दिवस औपचारिकता नहीं, कृतज्ञता का पर्व : मुनि वीरसागर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर संत शिरोमणि आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य निर्यापक श्रमण श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने विशेष देशना में गुरु-शिष्य परंपरा, शिक्षक की भूमिका और कृतज्ञता के वास्तविक स्वरूप पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि शिक्षक दिवस केवल शुभकामनाएं देने, पुष्प अर्पित करने या सम्मान समारोह आयोजित करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह गुरु और शिक्षक के प्रति अपने दायित्व को समझने का अवसर है। मुनि श्री ने कहा कि माता-पिता व्यक्ति को जन्म देते हैं, जबकि शिक्षक और गुरु उसके व्यक्तित्व को दिशा देने, ज्ञान बढ़ाने और जीवन की नींव मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बाल्यकाल में सीखे अक्षर, भाषा, गणित, अनुशासन और संस्कार आगे चलकर व्यक्ति के व्यक्तित्व की आधारशिला बनते हैं। गुरु जीवन का शिल्पकार गुरु की भूमिका को स्पष्ट करते हुए मुनि श्री ने पाषाण और मूर्तिकार का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पाषाण में प्रतिमा बनने की संभावना होती है, लेकिन उसे आकार देने के लिए कुशल शिल्पी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति में प्रतिभा और आत्म-सामर्थ्य मौजूद है, किंतु अज्ञान, अहंकार और अन्य अवगुण उसके विकास में बाधा बन सकते हैं। गुरु मार्गदर्शन और अनुशासन के माध्यम से इन बाधाओं को दूर कर शिष्य की श्रेष्ठ

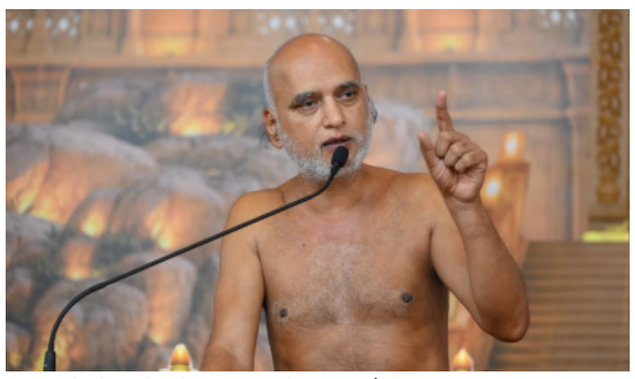

संभावनाओं को सामने लाने का कार्य करते हैं। उन्होंने क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर और उनके प्रशिक्षक रमाकांत आचरेकर का उदाहरण देते हुए कहा कि प्रतिभा के साथ सही मार्गदर्शन, निरंतर अभ्यास और अनुशासन भी आवश्यक है। गुरु की सार्थकता इसी में है कि वह शिष्य की प्रतिभा को पहचानकर उसे बेहतर दिशा प्रदान करे। विनम्रता से बढ़ता है शिष्य का मूल्य गुरु-शिष्य संबंध को गणित के उदाहरण से समझाते हुए मुनि श्री ने कहा कि गुरु अंक के समान और शिष्य शून्य के समान है। अंक के पीछे शून्य जुड़ने पर उसका मूल्य बढ़ता जाता है। इसी प्रकार शिष्य विनम्रता, श्रद्धा और समर्पण के साथ गुरु के मार्गदर्शन को स्वीकार करता है तो उसका व्यक्तित्व निरंतर विकसित होता है। उन्होंने कहा कि प्रश्न करना गलत नहीं है, लेकिन ज्ञान प्राप्त करते समय विनम्रता और गुरु के प्रति श्रद्धा बनाए रखना आवश्यक है। तकनीक दे सकती है सूचना, संस्कार नहीं मुनि श्री ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मोबाइल और इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक तकनीक एक क्लिक पर बड़ी मात्रा में सूचनाएं और उत्तर उपलब्ध करा सकती है, लेकिन संस्कार, चरित्र और श्रेष्ठ आचरण का निर्माण केवल तकनीकी माध्यमों से नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि सूचना, ज्ञान और जीवन में उतरे हुए आचरण में अंतर है। तकनीक सही और गलत के बारे में जानकारी दे सकती है, लेकिन सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा तथा जीवन मूल्यों का विकास शिक्षक और गुरु के सान्निध्य से होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं मुनि श्री ने शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री, नौकरी और आर्थिक सफलता तक सीमित नहीं होना चाहिए। वास्तविक शिक्षा व्यक्ति को ज्ञानवान बनाने के साथ संवेदनशील, जिम्मेदार और संस्कारी नागरिक बनाने का कार्य करती है। उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों को उनके दायित्वों की याद दिलाते हुए कहा कि शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को सकारात्मक दिशा और संस्कार देना भी है। वहीं विद्यार्थियों का दायित्व केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि शिक्षक से मिले ज्ञान और संस्कारों को जीवन में उतारना है। ज्ञान को आगे बढ़ाना ही सच्ची कृतज्ञता शिक्षक दिवस पर कृतज्ञता के स्वरूप पर मुनि श्री ने कहा कि केवल एक दिन गुरु का सम्मान करना या धन्यवाद देना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक कृतज्ञता तब प्रकट होती है, जब व्यक्ति गुरु और शिक्षक से प्राप्त ज्ञान, कला, संस्कार और जीवन मूल्यों को समाज तथा अगली पीढ़ी तक पहुंचाता है। उन्होंने कहा कि ज्ञान को अपने तक सीमित रखने के बजाय उसका सदुपयोग करना और आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करना गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा का श्रेष्ठ रूप है। मुनि श्री ने लौकिक शिक्षक और आध्यात्मिक गुरु की भूमिकाओं को भी महत्वपूर्ण बताया। उनके अनुसार लौकिक शिक्षक व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और आत्मनिर्भरता की दिशा देता है, जबकि आध्यात्मिक गुरु आत्मज्ञान, सम्यक दृष्टि और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। अंत में उन्होंने युवा पीढ़ी से शिक्षक दिवस को महज औपचारिक उत्सव न बनाने का आान किया। उन्होंने कहा कि गुरु और शिक्षक का सच्चा सम्मान शब्दों से नहीं, बल्कि जीवन में सकारात्मक परिवर्तन से होता है। यदि व्यक्ति अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान को आचरण में उतारे, अवगुणों को दूर करे, विनम्रता और संस्कार अपनाए तथा उस ज्ञान को समाज और अगली पीढ़ी तक पहुंचाए, तभी शिक्षक दिवस की सार्थकता सिद्ध होगी। समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

पोस्टर लगाकर श्रीमद्भागवत कथा का प्रचार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 04 सितंबर 2026। बेंगलुरु में आयोजित होने वाली श्रीमद्भागवत कथा के प्रचार-प्रसार की तैयारियां शुरू हो गई हैं। विश्व शांति सेवा समिति, बेंगलुरु के कार्यकताओं ने शहर में कथा के पोस्टर लगाकर श्रद्धालुओं तक आगामी धार्मिक आयोजन की जानकारी पहुंचाने का अभियान चलाया। आयोजकों द्वारा जारी जानकारी के अनुसार, परम पूज्य शांतिदूत धर्मरत्न श्री देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज के मुखारविंद से श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 02 से 08 जनवरी 2027 तक किया जाएगा। कथा प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक आयोजित होने की जानकारी दी गई है। यह धार्मिक आयोजन प्रिंसेस श्राइन, गेट नंबर-9, पैलेस ग्राउंड, बेंगलुरु में प्रस्तावित है। आयोजन का संयोजन विश्व शांति सेवा समिति, बेंगलुरु द्वारा किया जा रहा है। कथा के प्रचार अभियान में विश्व शांति सेवा समिति, बेंगलुरु एवं उनके सहयोगी साथी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। कार्यकताओं ने विभिन्न स्थानों पर पोस्टर लगाकर श्रद्धालुओं से कथा आयोजन में शामिल होने का आान किया। आयोजकों के अनुसार, श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से भक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान, संस्कार और भारतीय संस्कृति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। आगामी कथा आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह देखा जा रहा है। समाचार प्रेषक रूपसिंह बेंगलुरु।

18 हजार साधुओं को वंदन कर श्रीकृष्ण ने अर्जित किया तीर्थंकर नामगोत्र

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में चातुर्मास के लिए विराजित प. पूज्य साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. ने ध्यान शतक ग्रंथ की विवेचना करते हुए साधना, संयम और परिषह सहनशीलता के महत्व पर प्रकाश डाला।

साध्वीश्री ने कहा कि जैन साधु-साध्वी भगवंत क्षुधा, प्यास सहित 22 प्रकार के परिषहों को समभावपूर्वक सहन करते हैं। उन्होंने कहा कि संसार में दिखाई देने वाले परिवर्तन पुद्गल के स्वभाव से जुड़े हैं। अच्छी वस्तु समय के साथ खराब हो सकती है और खराब वस्तु फिर अच्छी स्थिति में आ सकती है। जैन दर्शन में पुद्गल को सूक्ष्म और बादर– दो प्रकार का बताया गया है। प्रवचन के दौरान जिनशासन के प्रभावशाली आचार्यों की परंपरा का उल्लेख करते हुए साध्वीश्री ने चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्र सूरी के गुरु श्री जिन माणिक्य सूरी के जीवन प्रसंगों को भी सामने रखा। उन्होंने बताया कि जिन माणिक्य सूरी ने एक ही समय में 64 दीक्षाएं प्रदान की थीं और 12 उपाध्याय पद प्रदान किए थे। तृषा के कारण प्राण त्यागने के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने शुद्ध संयम और साधना की दृढ़ता को रेखांकित किया।

श्रीकृष्ण के जन्म और जैन परंपरा का प्रसंग

साध्वीश्री ने कहा कि भारत की भूमि महावीर, कृष्ण, राम और बुद्ध जैसे अनेक

महापुरुषों की जन्मभूमि रही है। जैन परंपरा के अनुसार श्रीकृष्ण वासुदेव आगामी चौबीसी के तीर्थंकर माने जाते हैं। प्रवचन में बताया गया कि श्रीकृष्ण ने 18 हजार जैन साधुओं को उत्कृष्ट भाव से वंदन कर तीर्थंकर नामगोत्र का अर्जन किया था। उन्होंने श्रीकृष्ण और भगवान महावीर के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि दोनों के जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जिन्हें जैन परंपरा में आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाता है। श्रीकृष्ण के जन्म के बाद यमुना में आए उफान को उनके अंगूठे के स्पर्श से शांत होने की मान्यता तथा भगवान महावीर के मेरु पर्वत पर अभिषेक के समय अंगूठे के स्पर्श से देवों की शंका का निवारण किए जाने के प्रसंग का उल्लेख किया गया।

इसी प्रकार बालक्रीड़ा के दौरान श्रीकृष्ण द्वारा कालिया नाग को शांत करने और भगवान महावीर द्वारा बाल्यकाल में सर्प रूपी बाधा को शांत कर मिथ्यात्व से सम्यक्त्व की ओर बढ़ने का संदेश देने वाले प्रसंगों की व्याख्या की गई। साध्वीश्री ने कहा कि श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र को दुष्प्रवृत्तियों के दमन के प्रतीक के रूप में देखा गया है, जबकि भगवान महावीर ने धर्मचक्र के माध्यम से आत्मशुद्धि और कर्मों के क्षय का मार्ग बताया।

नवग्रह महाजाप और पूजन दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से बताया गया कि शनिवार को नवग्रहों और उनसे संबंधित परमात्मा के स्वरूप का विवेचन किया जाएगा। रविवार को नवग्रह महाजाप एवं पूजन का आयोजन किया जाएगा। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया, बेंगलुरु

विजयेंद्र के बेल्लारी चलो मार्च में उमड़ा जनसैलाब

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

सिंधनूर, 4 सितंबर 2026। कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी के विरोध अभियान बेल्लारी चलो मार्च के चौथे दिन शुक्रवार को सिंधनूर में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक जुटे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र के नेतृत्व में शुरू हुआ मार्च सिंधनूर के कोर्ट सर्कल से रवाना होकर कराटागी नेवल क्रॉस की ओर बढ़ा। भाजपा ने राज्य सरकार पर सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और विभिन्न वर्गों के लंबित भुगतान को लेकर उपेक्षा का आरोप लगाया। मार्च में पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं सांसद गोविंदा करजोल, पूर्व मंत्री बी. श्रीरामुलु, पूर्व मंत्री एवं विधायक वी. सुनील कुमार सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता शामिल हुए। इसके अलावा विधायक महेश टेंगिनाकाई, एम.आर. पाटिल, भाजपा के राज्य उपाध्यक्ष राजुगौड़ा नायक, पूर्व मंत्री शिवनगौड़ा नायक सहित सांसद, विधायक, विधान परिषद सदस्य, पार्टी पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मार्च में शामिल रहे। गरीबों की समस्याओं को नजरअंदाज कर रही सरकार मीडिया से बातचीत करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने राज्य सरकार पर गरीबों, किसानों, दिहाड़ी मजदूरों और कमजोर वर्गों की समस्याओं की अनदेखी करने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि वृद्धावस्था पेंशन, दिव्यांगों के लिए मासिक सहायता और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ कई लाभार्थियों तक समय पर नहीं पहुंच रहा है। विजयेंद्र ने कहा कि सरकार को समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि कई लाभार्थियों को पिछले कुछ महीनों से सामाजिक सुरक्षा पेंशन और अन्य सहायता राशि मिलने में देरी हो रही है। हालांकि, इन दावों पर सरकार की ओर से विस्तृत प्रतिक्रिया का उल्लेख उपलब्ध नहीं कराया गया है। गंगा कल्याण योजना और आवास को लेकर भी उठाए सवाल विजयेंद्र ने गंगा कल्याण योजना के क्रियान्वयन को लेकर भी राज्य सरकार की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ अपेक्षित रूप से नहीं मिल पा रहा है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने बेघर और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए आवास योजनाओं के क्रियान्वयन पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों, मजदूरों, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों सहित सभी जरूरतमंद वर्गों के हितों पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। गारंटी योजनाओं और जमीनी मुद्दों पर राजनीतिक टकराव विजयेंद्र ने कांग्रेस सरकार पर अपनी गारंटी योजनाओं के प्रचार को प्राथमिकता देने का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और गरीबों की मूलभूत आवश्यकताओं पर भी समान रूप से ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा का विरोध अभियान राज्य में गरीबों, किसानों, श्रमिकों और कमजोर वर्गों से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाने के उद्देश्य से जारी है। वहीं, राज्य सरकार और कांग्रेस की ओर से भाजपा के आरोपों पर क्या प्रतिक्रिया दी जाती है, इस पर राजनीतिक नजर बनी हुई है। मार्च के माध्यम से भाजपा ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन, किसानों की समस्याओं और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों से जुड़े मुद्दों को लेकर सरकार पर दबाव बढ़ाने का प्रयास किया है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में राधा रानी बनी भवि बाघमार (सुपुत्री – निकिता उदित बाघमार), (दोहित्री – चन्दू ललित डाकलिया)

कर्नाटक पर वैश्विक निवेश की नजर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। कर्नाटक में प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), निवेश और नवाचार के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की संभावनाओं को मजबूत करने के उद्देश्य से दो भारतीय राजनयिकों के दौरे ने राज्य की वैश्विक आर्थिक पहुंच को नई दिशा देने की चर्चा तेज कर दी है। लॉस एंजिल्स स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास के कॉन्सुल जनरल डॉ. के. जे. श्रीनिवासा और अजरबैजान में भारत के राजदूत अभय कुमार ने कर्नाटक दौरे के दौरान राज्य के शीर्ष नेतृत्व, मंत्रियों और तकनीकी संस्थानों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। इस दौरान एआई, स्टार्टअप, एयरोस्पेस, उन्नत विनिर्माण, स्वच्छ ऊर्जा, पर्यटन और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में नई वैश्विक साझेदारियों की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया। राज्य नेतृत्व से हुई महत्वपूर्ण चर्चा दोनों राजनयिकों ने कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत और राज्य के शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व से मुलाकात कर कर्नाटक की अंतरराष्ट्रीय पहचान, तकनीकी क्षमता और निवेश संभावनाओं पर चर्चा की। बैठकों में राज्य के मजबूत औद्योगिक आधार, तेजी से विकसित हो रहे स्टार्टअप इकोसिस्टम, कुशल मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उसकी क्षमता को वैश्विक आर्थिक एवं तकनीकी केंद्रों से जोड़ने के अवसरों पर विशेष जोर दिया गया। दौरे का प्रमुख उद्देश्य कर्नाटक और दुनिया के महत्वपूर्ण निवेश एवं नवाचार केंद्रों के बीच आर्थिक, तकनीकी और संस्थागत सहयोग के नए रास्ते तलाशना बताया गया। मंत्रियों के साथ निवेश और टेक्नोलॉजी पर मंथन राजनयिकों ने राज्य सरकार के कई वरिष्ठ मंत्रियों से भी मुलाकात की। इनमें इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी एवं जैव प्रौद्योगिकी मंत्री प्रियांक खड़गे, बड़े एवं मध्यम उद्योग तथा अवसंरचना विकास मंत्री एम. बी. पाटिल, ऊर्जा एवं पर्यटन मंत्री के. जे. जॉर्ज तथा परिवहन मंत्री बायराथी सुरेश शामिल रहे। बैठकों में अंतरराष्ट्रीय निवेश

आकर्षित करने, प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ावा देने और कर्नाटक के स्टार्टअप एवं नवाचार तंत्र को वैश्विक स्तर पर अधिक मजबूत बनाने के उपायों पर चर्चा हुई। पर्यटन, उच्च-कुशल मानव संसाधन, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में कर्नाटक तथा अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के बीच मजबूत सहयोगी नेटवर्क विकसित करने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया। सरवम एआई में स्वदेशी तकनीक पर चर्चा दौरे के दौरान दोनों राजनयिकों ने बेंगलुरु स्थित "Sarvam AI" का भी दौरा किया। कंपनी की नेतृत्व टीम के साथ भारत में तेजी से विकसित हो रहे एआई इकोसिस्टम पर चर्चा की गई। बैठक में स्वदेशी फाउंडेशनल एआई मॉडल और भारतीय भाषाओं के लिए विकसित की जा रही बहुभाषी कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। भारत में विकसित हो रही एआई तकनीकों को अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी केंद्रों से जोड़ने और वैश्विक स्तर पर सहयोग बढ़ाने की संभावनाओं पर भी विचार-विमर्श हुआ। एयरोस्पेस और हाई-टेक विनिर्माण पर फोकस राजनयिकों ने कर्नाटक एयरोस्पेस पार्क और सेंटम इलेक्ट्रॉनिक्स का भी दौरा किया। इस दौरान उन्हें एयरोस्पेस, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स, उन्नत विनिर्माण और उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कर्नाटक की क्षमताओं की जानकारी दी गई। बैठकों में अंतरराष्ट्रीय निवेश आकर्षित करने और वैश्विक तकनीकी सहयोग को विस्तार देने के अवसरों पर चर्चा हुई। साथ ही राज्य की कंपनियों को अंतरराष्ट्रीय नवाचार और विनिर्माण नेटवर्क से जोड़ने की संभावनाओं पर भी ध्यान दिया गया। आईटी से आगे बढ़कर व्यापक वैश्विक साझेदारी की तैयारी दौरे में केवल सूचना प्रौद्योगिकी और एआई ही नहीं, बल्कि एयरोस्पेस एवं रक्षा, उन्नत विनिर्माण, स्वच्छ ऊर्जा, पर्यटन, स्टार्टअप और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों को भी प्राथमिकता दी गई। इन क्षेत्रों को कर्नाटक के अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के महत्वपूर्ण आधार के रूप में देखा जा रहा है। उद्देश्य राज्य की स्थानीय तकनीकी और औद्योगिक क्षमता को वैश्विक निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी और संस्थागत सहयोग से जोड़ना है। अमेरिका के वेस्ट कोस्ट से सहयोग की संभावनाएं लॉस एंजिल्स स्थित भारत के कॉन्सुल जनरल के लिए यह दौरा कर्नाटक और अमेरिका के वेस्ट कोस्ट, विशेषकर दक्षिणी कैलिफोर्निया के नवाचार तंत्र के बीच सहयोग की संभावनाएं तलाशने का महत्वपूर्ण अवसर रहा। एआई और उभरती प्रौद्योगिकियां, एयरोस्पेस, उच्च शिक्षा, स्टार्टअप, स्वच्छ ऊर्जा, निवेश और नवाचार को ऐसे प्रमुख क्षेत्र माना गया, जहां भविष्य में सहयोग को विस्तार दिया जा सकता है। कुल मिलाकर, दोनों भारतीय राजनयिकों का कर्नाटक दौरा राज्य को वैश्विक निवेश और प्रौद्योगिकी नेटवर्क से अधिक मजबूती से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि इन चचाओं के ठोस परिणाम और भविष्य की साझेदारियों का स्वरूप आने वाले समय में संबंधित पक्षों के बीच होने वाली आगे की बातचीत और समझौतों पर निर्भर करेगा।

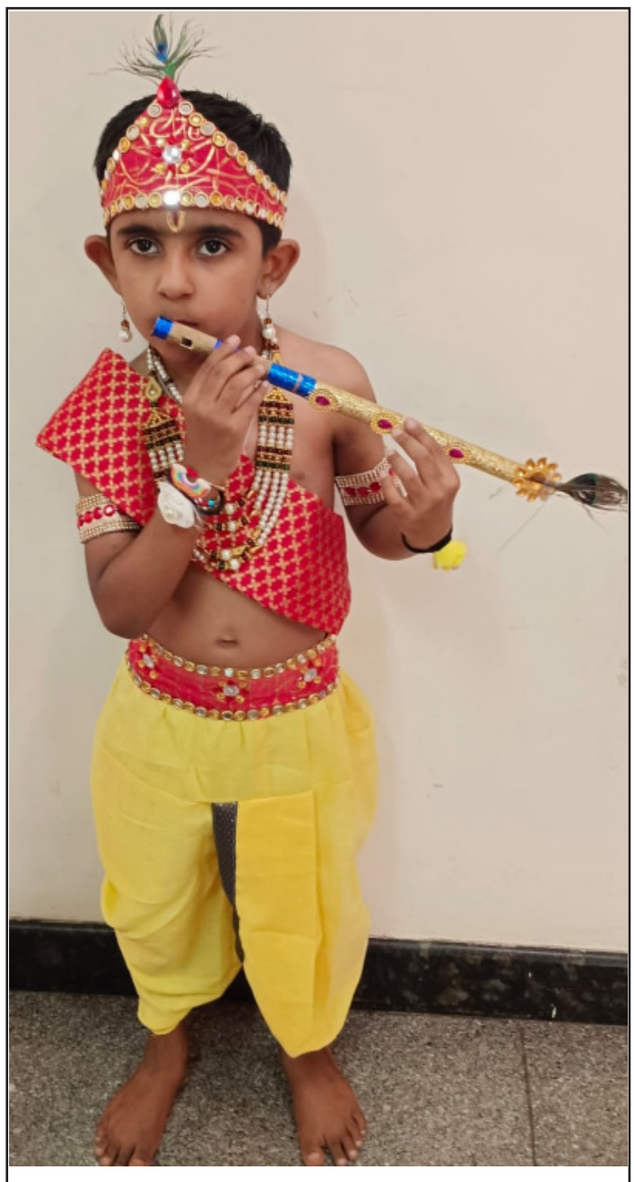

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में कृष्णा बना प्रभात हर्ष चौधरी, (सुपुत्र – रीना कुमारी सागर चौधरी),(भतीजा पुत्र – उर्मिला कुमारी गणेश चौधरी), (सुपौत्र – भंवरी देवी धन्नाराम चौधरी) एवं समस्त गैया परिवार।

ओबीसी को पंचायती राज संस्थाओ में जनसंख्या के अनुपात में उचित प्रतिनिधित्व देने की मांग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

जालौर, 4 सितंबर 2026। अन्य पिछड़ा वर्ग को पंचायतीराज संस्थाओं में जनसंख्या के अनुपात में समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने की मांग को लेकर जालौर जिले के प्रमुख नागरिकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने जिला कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री तथा अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग (पंचायतीराज में जनप्रतिनिधित्व) के अध्यक्ष को ज्ञापन भेजा है। प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षा विभाग के शालादर्पण, पीएसपी पोर्टल और यूडाईस डाटा के आधार पर अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या का आकलन कर पंचायतीराज संस्थाओं में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की मांग उठाई। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व शिक्षा विभाग से जुड़े पूर्व जिला अधिकारी भेराराम कलबी ने किया। प्रतिनिधिमंडल में एसबीआई के पूर्व प्रबंधक उम्मेद सुथार, दलपत सिंह आर्य, अंबालाल माली, अधिवक्ता ओमप्रकाश चौधरी, अधिवक्ता मुकेश कुमार तंवर, जीतू सिंह केशवाना तथा भीमाराम माली सहित अन्य लोग शामिल रहे। ज्ञापन में प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि अन्य पिछड़ा वर्ग के संबंध में किए जा रहे सर्वे के आधार पर जनआधार कार्ड को आधार मानते हुए प्रति परिवार औसतन पांच सदस्यों की गणना किए जाने की चर्चा है। प्रतिनिधिमंडल ने इस पद्धति पर पुनर्विचार की आवश्यकता जताई है। जनआधार के आधार पर गणना पर उठाए सवाल ज्ञापन में कहा गया कि कई अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवारों के जनआधार कार्ड अब तक बने हुए भी नहीं हैं। वहीं, पुराने

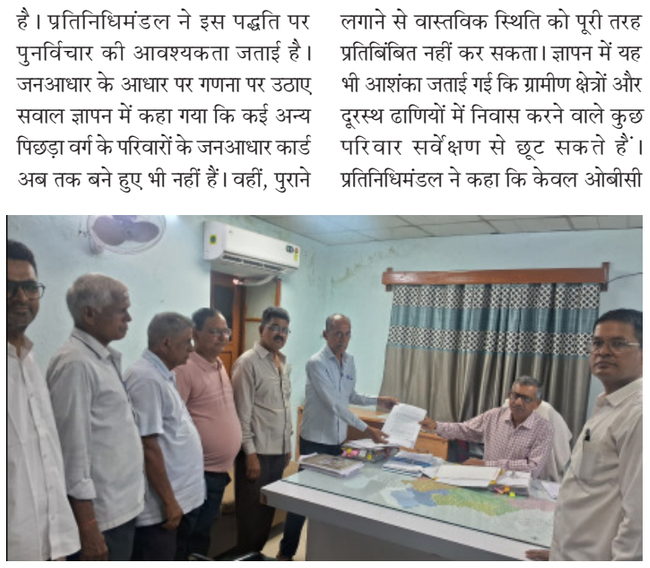

भामाशाह कार्डों में परिवार के सभी सदस्यों के नाम शामिल नहीं होने तथा बाद में जनआधार में परिवर्तित होने के बावजूद कई परिवारों का डाटा समय-समय पर अपडेट नहीं होने की बात भी सामने रखी गई। प्रतिनिधिमंडल का कहना है कि कई संयुक्त परिवारों में सदस्यों की संख्या पांच से काफी अधिक है और ग्रामीण क्षेत्रों में एक -- एक परिवार में 10 -- 10 , 15 - - 15 तक सदस्य हैं। ऐसे में प्रति परिवार औसतन पांच सदस्यों के आधार पर अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या का अनुमान लगाने से वास्तविक स्थिति को पूरी तरह प्रतिबिंबित नहीं कर सकता। ज्ञापन में यह भी आशंका जताई गई कि ग्रामीण क्षेत्रों और दूरस्थ ढाणियों में निवास करने वाले कुछ परिवार सर्वेक्षण से छूट सकते हैं। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि केवल ओबीसी परिवारों की गणना से उनकी वास्तविक जनसंख्या का प्रतिशत निर्धारित करना संभव ही नहीं है। इसके लिए सभी वर्गों की तुलनात्मक जनसंख्या का विश्वसनीय आधार होना आवश्यक है। शिक्षा विभाग के डाटा को आधार बनाने की मांग --- प्रतिनिधिमंडल ने अपने ज्ञापन में शिक्षा विभाग के उपलब्ध आंकड़ों को अधिक व्यापक आधार के रूप में उपयोग करने का सुझाव दिया। ज्ञापन के अनुसार, राजस्थान में सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का वर्गवार डाटा शालादर्पण पोर्टल पर उपलब्ध है, जबकि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से संबंधित वर्गवार जानकारी पीएसपी पोर्टल पर दर्ज की जाती है। इसके अतिरिक्त समस्त राजकीय एवं मान्यता प्राप्त गैर राजकीय विद्यालयों में वर्ष वार कक्षा 1 से 12 तक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का वर्ग वार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति , अन्यपिछड़ा वर्ग , सामान्य श्रेणी एवं अल्पसंख्यक वर्ग का संख्यात्मक विवरण की आधिकारिक वर्गवार जानकारी उपलब्ध होने का उल्लेख किया गया है। प्रतिनिधिमंडल ने दावा किया कि यह डाटा राज्य, जिला, ब्लॉक और पंचायत स्तर तक उपलब्ध होने के कारण जनसंख्या के वर्गवार अनुपात का आकलन करने में उपयोगी हो सकता है। ज्ञापन में कहा गया कि सर्व शिक्षा अभियान और शिक्षा का अधिकार अधिनियम के लागू होने के बाद शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक वर्गों के बच्चों का विद्यालयों में नामांकन बढ़ा है। ऐसे में विद्यालयों में दर्ज विद्यार्थियों के वर्गवार आंकड़े सामाजिक संरचना के आकलन में एक महत्वपूर्ण आधिकारिक आधार बन सकते हैं। जालौर में ओबीसी नामांकन का आंकड़ा प्रस्तुत --- प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षा विभाग के यूडाईस आंकड़ों का हवाला देते हुए जालौर जिले में कक्षा 1 से 12 तक अध्ययनरत विद्यार्थियों में अन्य पिछड़ा वर्ग के नामांकन प्रतिशत का उल्लेख किया। ज्ञापन में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार शैक्षणिक सत्र 2024-25 में ओबीसी विद्यार्थियों का नामांकन प्रतिशत 52.23 प्रतिशत, जबकि 2025-26 में 51.64 प्रतिशत बताया गया है। प्रतिनिधिमंडल ने मांग की कि शिक्षा विभाग के सचिव स्तर से शालादर्पण, पीएसपी पोर्टल और यूडाईस के उपलब्ध वर्गवार आंकड़ों को राज्य, जिला, ब्लॉक और पंचायत स्तर पर अधिकृत रूप से प्राप्त किया जाए। आरक्षण प्रस्ताव तैयार करने की मांग -- ज्ञापन में मांग की गई कि उपलब्ध अधिकृत आंकड़ों के आधार पर राजस्थान में पंचायतीराज संस्थाओं में वर्गवार प्रतिनिधित्व और आरक्षण से संबंधित प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। प्रतिनिधिमंडल का कहना है कि अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रतिनिधित्व से जुड़े निर्णय विश्वसनीय और व्यापक आंकड़ों के आधार पर किए जाने चाहिए, ताकि सभी वर्गों को न्यायसंगत अवसर मिल सके। ज्ञापन के माध्यम से सरकार और संबंधित आयोग से इस विषय पर उपलब्ध आधिकारिक आंकड़ों का परीक्षण कर उचित निर्णय लेने की मांग की गई है। समाचार प्रेषकः भेराराम कलबी, सेवानिवृत्त डीईओ, वाटेरा, जालौर।

करमावास में हरियाली का संकल्प

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

करमावास, 4 सितंबर 2026।

राजस्थान सरकार के हरियालो राजस्थान अभियान के तहत ग्राम पंचायत करमावास में विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान के अंतर्गत 28 अगस्त से 3 सितंबर 2026 तक चलाए गए विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतिम दिन अमृत सरोवर के समीप स्थित श्री शीतलामाता मंदिर परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में पंचायत समिति समदड़ी के अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों तथा ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

इस अवसर पर तहसीलदार समदड़ी हीरालाल मेहता, पंचायत समिति समदड़ी के विकास अधिकारी तुलसाराम, सहायक अभियंता प्रदीप गोरड़, ग्राम पंचायत करमावास की प्रशासक श्रीमती अणादेवी, कनिष्ठ तकनीकी सहायक देवेंद्र शर्मा तथा ग्राम विकास अधिकारी साधुसिंह घमावत सहित ग्राम पंचायत करमावास के जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं ग्रामीणों ने वृक्षारोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण संरक्षण और लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल का संदेश दिया। वक्ताओं ने कहा कि वृक्षारोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, हरित वातावरण और बेहतर पर्यावरण सुरक्षित करने की सामूहिक जिम्मेदारी है। ग्रामीणों ने भी अभियान में सहभागिता करते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया। अमृत सरोवर एवं मंदिर परिसर के आसपास हरियाली विकसित करने की दिशा में इस पहल को पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कदम माना गया।

हरियालो राजस्थान अभियान के माध्यम से प्रदेशभर में पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र बढ़ाने के उद्देश्य से जनभागीदारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है। करमावास में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम ने भी इसी संदेश को मजबूत किया कि प्रकृति की सुरक्षा और हरियाली का विस्तार समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। हरियालो राजस्थान–हरित और स्वच्छ भविष्य की ओर एक सार्थक कदम।

समाचार प्रेषकः किशोर पटेल गोलियां चौधरीयान, हुब्बल्ली, कर्नाटक।

माता के जयकारों से गूंजी पदयात्रा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

चितलवाना/आकोली, 4 सितंबर 2026। श्री चेहर धाम आकोली से विरात्रा माता के दर्शन के लिए भोपाजी जालारामजी के नेतृत्व में निकली पैदल यात्रा श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न हुई। पदयात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यात्रा मार्ग माता के जयकारों और धार्मिक भजनों से भक्तिमय बना रहा।

पदयात्रा में पुरुषों के साथ महिलाओं और बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। श्रद्धालु पूरे उत्साह और श्रद्धाभाव के साथ विरात्रा माता के जयकारे लगाते हुए आगे

बढ़े। यात्रा के दौरान अनुशासन और धार्मिक आस्था का वातावरण देखने को मिला। विरात्रा माता के दरबार पहुंचने पर श्रद्धालुओं ने विधि-विधान एवं श्रद्धाभाव से माता के दर्शन किए। इस दौरान परिवार, समाज और क्षेत्र में सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई। श्रद्धालुओं ने सभी यात्रियों और समाजबंधुओं के मंगल की प्रार्थना भी की। भोपाजी जालारामजी के नेतृत्व में सम्पन्न हुई इस पदयात्रा में महिलाओं और बच्चों की उल्लेखनीय भागीदारी रही। श्रद्धालुओं ने पैदल यात्रा को धार्मिक आस्था और साधना का अनुभव बताते हुए आयोजन में सहयोग करने वाले समाजबंधुओं एवं आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। यात्रा के शांतिपूर्ण एवं सफल सम्पन्न होने पर श्रद्धालुओं ने विरात्रा माता से क्षेत्र में सुख-शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। समाचार प्रेषकः दलपतसिंह भायल बेंगलुरु।

KPSC भर्ती जांच में IAS अधिकारी निलंबित

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। कर्नाटक सरकार ने कर्नाटक लोक सेवा आयोग (KPSC) की भर्ती प्रक्रियाओं में कथित अनियमितताओं की जांच के बीच वर्ष 2016 बैच के कब्र अधिकारी ज्ञानेंद्र कुमार गंगवार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। यह कार्रवाई अपराध जांच विभाग (CID) की जांच लंबित रहने के दौरान की गई है। ज्ञानेंद्र कुमार गंगवार पूर्व में KPSC में परीक्षा नियंत्रक के पद पर कार्यरत रहे हैं। गिरफ्तारी से पहले वह कर्नाटक सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) विभाग में निदेशक के पद पर तैनात थे। CID ने उन्हें कथित भर्ती अनियमितताओं के मामले में 29 अगस्त को गिरफ्तार किया था। सरकार के निलंबन आदेश में भर्ती प्रक्रिया की निष्पक्षता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता से जुड़े आरोपों की गंभीरता का उल्लेख किया गया है। आदेश में यह भी कहा गया कि अधिकारी 48 घंटे से अधिक समय

तक आधिकारिक हिरासत में रहे, जिसे निलंबन के निर्णय के आधारों में शामिल किया गया। CID और ED की जांच जारी मामले की जांच CID द्वारा की जा रही है, जबकि प्रवर्तन निदेशालय (ED) भी प्रकरण से जुड़े वित्तीय पहलुओं और अन्य आरोपों की जांच कर रहा है। जांच एजेंसियों की कार्रवाई के बाद इस मामले में भर्ती प्रक्रियाओं की पारदर्शिता और परीक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठे हैं। जांच अभी जारी है और अधिकारी के खिलाफ लगाए गए आरोपों पर अंतिम निष्कर्ष जांच पूरी होने तथा सक्षम न्यायिक अथवा प्रशासनिक प्रक्रिया के बाद ही सामने आएगा। इसलिए वर्तमान कार्रवाई को आरोपों की जांच के दौरान की गई प्रशासनिक कार्रवाई के रूप में देखा जा रहा है। निलंबन अवधि में मुख्यालय छोड़ने पर रोक सरकारी आदेश के अनुसार निलंबन अवधि के दौरान ज्ञानेंद्र कुमार गंगवार को नियमानुसार निर्वाह भत्ता दिया जाएगा। साथ ही राज्य सरकार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना उन्हें मुख्यालय छोड़ने की अनुमति नहीं होगी। KPSC भर्ती प्रक्रियाओं से जुड़े इस मामले की जांच आगे बढ़ने के साथ ही प्रकरण के अन्य पहलुओं पर भी स्थिति स्पष्ट होने की संभावना है। सरकार और जांच एजेंसियों की आगामी कार्रवाई पर अब सभी की निगाहें बनी हुई हैं।

धरतीपकड़ नागरमल बाजोरिया नहीं रहे

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

भागलपुर, 4 सितंबर 2026। बिहार के भागलपुर निवासी और चुनावी मैदान में लगातार उतरने के लिए चर्चित नागरमल बाजोरिया उर्फ धरतीपकड़ का 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन के साथ ही भारतीय चुनावी राजनीति के एक ऐसे अनोखे अध्याय का अंत हो गया, जिसमें उन्होंने वार्ड सदस्य से लेकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद तक के लिए बड़ी संख्या में चुनाव लड़े। रिपोर्टों के अनुसार, बाजोरिया ने अपने जीवन में 280 से अधिक चुनाव लड़े, लेकिन किसी भी चुनाव में उन्हें जीत हासिल नहीं हुई। चुनाव लड़ने के इसी असाधारण सिलसिले के कारण उन्हें धरतीपकड़ के नाम से पहचान मिली और उनका नाम चुनावी इतिहास में अलग पहचान बना गया। बताया जाता है कि उन्होंने अलग-अलग चुनावों में कई बड़े राजनीतिक नेताओं के खिलाफ भी अपनी उम्मीदवारी पेश की। इनमें पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और राजीव गांधी, संजय गांधी तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे चर्चित नाम शामिल रहे।

चुनाव लड़ना बना जीवन का संकल्प

नागरमल बाजोरिया के लिए चुनाव केवल जीत-हार का माध्यम नहीं रहा। वे लगातार चुनाव मैदान में उतरते रहे और हर बार अपनी उम्मीदवारी दर्ज कराते रहे। स्थानीय निकायों से लेकर देश के सर्वोच्च संवैधानिक पदों तक चुनाव लड़ने का उनका सफर असाधारण माना जाता है। उनकी पहचान ऐसे उम्मीदवार के रूप में बनी, जो परिणाम की परवाह किए बिना चुनाव प्रक्रिया में अपनी भागीदारी को महत्व देता था। इसी कारण वे चुनावी राजनीति में एक अनोखे और चर्चित व्यक्तित्व के रूप में लंबे समय तक लोगों के बीच चर्चा का विषय बने रहे। उनकी मृत्यु की खबर सामने आने के बाद चुनावी दुनिया में उनके लंबे सफर और असाधारण चुनावी रिकॉर्ड को लेकर चर्चाएं फिर तेज हो गई हैं। हालांकि उनके द्वारा लड़े गए चुनावों की सटीक संख्या और विभिन्न चुनावों का विस्तृत रिकॉर्ड अलग-अलग रिपोर्टों में भिन्न रूप से उल्लेखित मिलता है। नागरमल बाजोरिया का जीवन यह भी दशार्ता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव केवल सत्ता हासिल करने का माध्यम नहीं, बल्कि अपनी राजनीतिक भागीदारी दर्ज कराने का अवसर भी हो सकता है। बिना जीत के बावजूद सैकड़ों बार चुनाव लड़ने के कारण उनका नाम भारतीय चुनावी इतिहास की अनूठी घटनाओं में याद किया जाता रहेगा।

राम जन्मोत्सव से राममय हुआ कथा पंडाल

छायाचित्रः किशोर कुमार दफ्तरी

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 4 सितंबर 2026। पैलेस ग्राउंड के गेट नंबर 9 पर 1 से 7 सितंबर तक आयोजित भव्य श्रीराम कथा के चौथे दिन कथा पंडाल भक्ति और उल्लास के रंग में सराबोर नजर आया। परम पूज्य श्री राजन जी महाराज ने श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन करते हुए भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव, नामकरण संस्कार, बाल लीलाओं और महर्षि विश्वामित्र के अयोध्या आगमन का विस्तार से वर्णन किया। कथा के दौरान महाराज जी ने भगवान श्रीराम के अवतरण का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि राजा दशरथ को जब पुत्र जन्म का शुभ समाचार मिला तो उनका हृदय परमानंद से भर उठा। दासी ने महाराज को बधाई देते हुए पुत्र जन्म की सूचना दी और यह समाचार सुनते ही राजा दशरथ आनंद में डूब गए। उन्होंने बताया कि मनु महाराज और माता शतरूपा ने भगवान की प्राप्ति के लिए 21 हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ने वरदान दिया था कि त्रेता युग में वे स्वयं उनके घर पुत्र रूप में अवतरित होंगे। इसी भाव से राजा दशरथ आनंद-विभोर होकर कहते हैं कि जिन भगवान का नाम लेने मात्र से समस्त मंगल हो जाता है, आज उन्हीं भगवान ने मेरे घर पुत्र रूप में जन्म लिया है। सोहर गीत पर झूम उठा कथा पंडाल भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव का वर्णन करते हुए श्री राजन जी महाराज ने अपना परिचित सोहर गीत प्रस्तुत किया। बधाई गीत की मधुर धुन गूंजते ही पूरा कथा पंडाल भक्तिरस में झूम उठा। श्रद्धालुओं ने जय श्रीराम के गगनभेदी जयघोष के साथ जन्मोत्सव का उल्लास मनाया। महाराज जी ने कहा कि प्रभु श्रीराम के जन्म के बाद एक महीने तक अयोध्या में मानो दिन ही दिन रहा और लोगों को रात होने का भान तक नहीं हुआ। इसका भावार्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्यावासी भगवान के जन्मोत्सव के आनंद में इतने डूब गए थे कि उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहा। उन्होंने बताया कि इस दिव्य आनंद का अनुभव करने के लिए भगवान शिव भी काकभुशुंडी जी के साथ वहां पहुंचे थे। राजा दशरथ अपने आनंद को सभी के बीच बांट रहे थे और जिसने जो इच्छा व्यक्त की, उसे हाथी, घोड़े, सोना, चांदी और अन्य वस्तुएं दान स्वरूप प्रदान की जा रही थीं। चारों राजकुमारों को आशीर्वाद देते हुए लोगों ने उनके चिरंजीवी होने की कामना की। इस प्रसंग पर महाराज जी ने जीवन का संदेश देते हुए कहा कि जीवन का वास्तविक आनंद केवल पाने में नहीं, बल्कि दूसरों को देने और खुशियां बांटने में है। राजा दशरथ ने अपने जीवन से इसका आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। चारों भाइयों के नामों का आध्यात्मिक महत्व इसके बाद कथा में नामकरण संस्कार का प्रसंग आया। राजा दशरथ ने गुरु महाराज से चारों राजकुमारों का नामकरण करने का आग्रह किया। कथा के माध्यम से चारों भाइयों के नामों का आध्यात्मिक महत्व समझाया गया। महाराज जी ने कहा कि जो पूरे जगत को विश्राम प्रदान करे, वही राम है। भरत नाम का भाव बताते हुए कहा गया कि जो सभी के हृदय को राम प्रेम से भर दें, वे भरत हैं। लक्ष्मण नाम के भावार्थ पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि मनुष्य के भीतर काम, क्रोध, मोह, माया और लोभ जैसे अनेक शत्रु होते हैं। जिनके स्मरण से इन विकारों का नाश हो और जिनमें दिव्य एवं सुंदर लक्षण विद्यमान हों, वे लक्ष्मण हैं। महाराज जी ने कहा कि चारों राजकुमार चारों वेदों के समान हैं और उनका जीवन मानव समाज को धर्म, प्रेम, त्याग और मयार्दा का संदेश देता है। माता कौशल्या को हुए विराट स्वरूप के दर्शन कथा के दौरान माता कौशल्या और भगवान श्रीराम के दिव्य प्रसंग ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। प्रसंग के अनुसार माता कौशल्या ने अपने कुलदेव श्री रंगनाथ जी को भोग लगाया था। बाद में उन्होंने देखा कि जिस प्रभु को उन्होंने पुत्र रूप में जन्म दिया है, वही भगवान भोग ग्रहण कर रहे हैं। माता कौशल्या को भगवान के शरीर में चंद्रमा, सूर्य, ब्रह्मा सहित समस्त देवताओं और संपूर्ण सृष्टि के दर्शन हुए। यह अद्भुत दृश्य देखकर वे विस्मित और भयभीत हो गईं। माता की भावना को समझकर भगवान ने अपना विराट स्वरूप समेट लिया और पुनः छोटे बालक के रूप में प्रकट हुए। माता कौशल्या ने भगवान से कहा कि आप तो स्वयं जगदीश्वर हैं। इस पर बाल रूप में भगवान ने माता के प्रति अपना वात्सल्य भाव प्रकट करते हुए स्वयं को उनका पुत्र बताया। महाराज जी ने कहा कि भगवान ने यह दिव्य स्वरूप केवल माता कौशल्या को दिखाकर उन्हें अपनी माया से मुक्त किया। बाल लीलाओं में झलका मातृ वात्सल्य महाराज जी ने भगवान श्रीराम की बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए माता कौशल्या के वात्सल्य भाव को भी जीवंत किया। माता कौशल्या बालक राम को बाहर खेलने जाने से रोकते हुए उनकी सुरक्षा और नजर लगने की चिंता करती हैं तथा उन्हें भाइयों के साथ आंगन में खेलने के लिए कहती हैं। इस प्रसंग के माध्यम से महाराज जी ने कहा कि भगवान स्वयं परमात्मा होते हुए भी माता के लिए एक सामान्य बालक बनकर उनके वात्सल्य प्रेम का आनंद लेते हैं। विश्वामित्र के आगमन से कथा में नया प्रसंग कथा आगे बढ़ते हुए महर्षि विश्वामित्र के अयोध्या आगमन के प्रसंग पर पहुंची। राजा दशरथ ने उनका अत्यंत सम्मान किया और विधि-विधान से उनका स्वागत किया। इसके बाद राजा दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को महर्षि विश्वामित्र से मिलवाया। कथा के अनुसार जैसे ही महर्षि विश्वामित्र की दृष्टि बालक श्रीराम पर पड़ी, वे उनके दिव्य स्वरूप को देखकर भाव-विभोर हो उठे। इसी भावपूर्ण प्रसंग पर कथा पंडाल में भजन गूंज उठा–

तेरी मंद-मंद मुसकनिया पे बलिहार राघव जी... भजन और कथा के अद्भुत संगम ने पूरे वातावरण को राममय बना दिया।

तनी देतऽ बँसुरी बजाय---

लागल बाटे मनवाँ मोरा, तरसे परनवाँ,
हे कन्हइया सुना...
तनी देतऽ बँसुरी बजाय।।
सात सुर वाली बंसी टेरि देतऽ कान्हा,
सरगम के साज में, समायल जमाना,
असरा लगवले बानी मानि लऽ कहनवाँ।
हे कन्हइया सुना...
तनी देतऽ बँसुरी बजाय।।
सोहेला मोर पंख,तोहरी लिलरिया,
राधा के प्यारे कान्हा सुना हे सँवरिया,
सरधा जोगवले बानी दयि दऽ धियनवाँ।
हे कन्हइया सुना...
तनी देतऽ बँसुरी बजाय।।
मधुबन बा सून, सूनी गोकुल नगरिया,
सिसके ला फूल कली सिसके डगरिया,
आवा सजावा 'लाल' उजरल चमनवाँ।
हे कन्हइया सुना...
तनी देतऽ बँसुरी बजाय।।

रचना –लालबहादुर चौरसिया लाल
रचना का समय – (श्रीकृष्णजन्माष्टमी– 2007)

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at Maruthi"Plaza", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026